मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

ज्येष्ठ-आषाढ़ संवत् नानकशाही ५५६ जून 2024 वर्ष १७ अंक १०

गुरुद्वारा शहीदी-स्थान श्री गुरु अरजन देव जी,
डेहरा साहिब, लाहौर (पाकिस्तान)

गुरुद्वारा साहिब भक्त कबीर जी, मगहर
ज़िला संत कबीर नगर (उत्तर प्रदेश)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमत ज्ञान

ज्येष्ठ-आषाढ़ , संवत् नानकशाही 556
वर्ष 17 अंक 10 जून 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
. . . श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी 8
- डॉ. परमजीत कौर
श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब 14
-डॉ. मनजीत कौर
भक्त कबीर जी की विचारधारा 20
-प्रो. नव संगीत सिंघ
श्री अकाल तख़्त साहिब का ऐतिहासिक महत्व 23
-स. शमशेर सिंघ अशोक
. . . बाबा बंदा सिंघ बहादुर 26
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
चौधरी भाई लंगाह 31
-बीबी गुरमीत कौर
पंचम पातशाह के अनन्य सिक्ख 36
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
महाराजा रणजीत सिंघ की धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक नीतियाँ 40
-डॉ. कशमीर सिंघ नूर
भाई वीर सिंघ का साहित्यक प्रभाव 44
-डॉ.धरम सिंघ
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥
दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥
रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥
करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥
प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥
आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५ ॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में आषाढ़ महीने की अति ग्रीष्म ऋतु के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य-मात्र को सांसारिक इच्छाओं के अत्यधिक बुरे प्रभाव से बचकर जीवन रूपी रात्रि को न गंवाने तथा सतिगुरु जी की रूहानी अगुआई को प्राप्त करते हुए परमात्मा का साक्षात्कार प्राप्त करने का अंतिम उद्देश्य पूरा करने की निर्मल प्रेरणा प्रदान करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि आषाढ़ का महीना भले ही अत्यंत गर्मी वाला है लेकिन यह गर्मी उन मनुष्यों को महसूस होती है जिनके पास परमात्मा का नाम नहीं है। कहने से तात्पर्य, आषाढ़ महीने की कठोर उष्मा से परमात्मा के सदैव शीतल नाम की ओट में रहकर बचाव पूर्णत: संभव है। गुरु जी कथन करते हैं कि यह माह उसको गर्म लगता है जिसने सारे विश्व के सृजनहार को भुला दिया है और मनुष्य से ही आशा लगा रखी है। सदीवी सुख परमात्मा के नाम की ओट में ही है।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि प्रभु के बिना किसी भी अन्य का सहारा चाहने अथवा लेने में व्यर्थ की भटकना है। यह गले में यम की फांसी पड़ने के तुल्य है। ऐसा मनुष्य मस्तक पर लिखे अनुसार ही फल पाता है अर्थात् सदैव प्रभु-भय में रहता है। जीवन रूपी रात यूं ही चली जाती है और अंतिम समय में मनुष्य को निराशा हाथ लगती है।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जीवन के आषाढ़ महीने में जिनका साधु अथवा सतिगुरु के साथ साक्षात्कार हो गया वे प्रभु-दरबार में मुक्त हैं। हे प्रभु मालिक! अपनी कृपा करना! मेरे मन में भी आपके दीदार की प्यास जग जाए! यही प्रार्थना है। हे नानक! मुझे सतिगुरु द्वारा ज्ञान हो जाए कि आपके बिना कोई भी अन्य मेरे साथ नहीं है। जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु-चरणों का निवास है उसको ग्रीष्म ऋतु से जुड़ा आषाढ़ महीना भी सुखदायी लगता है।

संपादकीय

मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ।।

इतिहास में घटित बहुत सारी घटनाएं समय गुज़र जाने के बाद वो चमक नहीं रख पाती जो सिक्ख इतिहास में गुरमति सिद्धांतों की तर्ज़मानी में से उत्पन्न हुई घटनाएं बरकरार रखती हैं। अकाल पुरख के मिशन को साकार करने के लिए गुरु इस धरती को निवाजता है और इस दैवी मिशन की पूर्ति हेतु गुरु का आशीर्वाद महान गुरसिक्ख योद्धाओं को शहीदी देने के लिए असीम शक्ति, टेक तथा साहस प्रदान करता है । सिक्ख इतिहास की दास्तां में जून का महीना शूरवीर योद्धाओं द्वारा अन्याय, अत्याचार तथा ज़ब्र-जुल्म के विरुद्ध न्याय, मानवाधिकारों, कौमी मांगों तथा सच-धर्म की स्थापि के लिए जूझते हुए दी गई कुर्बानियों को अपने अंदर समेटे हुए है, जिसको रहती दुनिया तक याद किया जाता रहेगा। अत्यंत गर्मी के इस महीने में शहीदों के सिरताज, पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने गर्म तवी पर बैठ कर, गर्म रेत शीश पर डलवा कर खौलते पानी की देग में बैठ कर, शांतमयी ढंग से शहीदी प्राप्त कर मानवता के सामने अत्याचारी ज़ालिम हुकूमत का पर्दाफाश किया। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद जुल्म, अन्याय के विरुद्ध भक्ति में से उपजी शक्ति के उपयोग की जुल्म के विरुद्ध अनंत जंगों, मोर्चों, साकों, घल्लूघारों की लंबी दास्तां शुरू होती है। जून महीने में असंख्य सिंघ-सिंघनियों, बच्चों, बुजुर्गों की शहादत सिक्ख इतिहास के रक्त-रंजित पृष्ठों में समोई हुई है।

जून, १७१६ ई. तथा जून, १९८४ ई. के शहीद नायकों की बात करें तो इनमें सिर्फ समय, स्थान तथा शख़्सियत बदली है, शहादत की मंशा, शहादत का जज़्बा तथा दोनों के पीछे कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति एक ही रही है ।

ज़ालिम हुकूमत द्वारा लताड़े जा रहे मज़लूमों को उनका हक दिलाने एवं न्यायकारी शासन स्थापित करने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बाबा बंदा सिंघ बहादुर का चयन उनकी दूरदर्शिता का परिणाम था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कृपा-दृष्टि करते हुए बाबा जी को खंडे-बाटे की पाहुल छका उनमें जो रूहानी परिवर्तन लाए ऐसा परिवर्तन नाम-रूपी अमृत के हृदय में बस जाने पर ही आता है :

भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अंम्रितु रिदै सिंचाई ।।

नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ।। *(पन्ना ६७९)*

यह कलगीधर पिता के आशीर्वाद की रूहानी शक्ति थी कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने खालसायी राज्य स्थापित कर *'हम राखत पातशाही दावा'* के शब्दों को सच कर दिखाया तथा दुनिया के इतिहास में पहली बार भारत में ज़मींदारी प्रथा को खत्म कर किसानों को उनकी ज़मीनें सौंपी गईं। इस तरह बाबा बंदा सिंघ बहादुर का यह लोक-हितैषी तथा न्यायकारी प्रशासन वाले लोकतंत्र का आगाज़ था।

समय बीत जाने के साथ समय की हुकूमतों द्वारा खालसा पंथ की कुर्बानियों को भुला दिया गया। खालसा पंथ की जायज़ मांगों को भी ठुकराया गया। कौमी हकों के लिए सिंघ शूरवीरों को संघर्ष कर शहादत प्राप्त करनी पड़ी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बारे में बात करें तो साधारण बुद्धि पढ़-सुनकर आश्चर्यचकित हो जाती है कि वो कौन-सी शक्ति थी, कौन-सा जज़्बा था कि उनकी आंखों के सामने उनके चार वर्षीय पुत्र के टुकड़े-टुकड़े कर उसका तड़पता हुआ दिल उनके मुंह में ठूंसा गया और वे अडोल बैठे रहे? गर्म सलाखों से आंखें बेध दी जाएं परंतु अडोलता भंग न हो? नाम-रंग में रंगी इस रूह के धैर्य को गुरबाणी की रौशनी में ही समझा जा सकता है। मन से पैदा हुई ममता पुत्र को कत्ल होता देखकर डोल सकती है किंतु बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने तो गुरु-शब्द की कमाई द्वारा 'हउमै ममता सबदि जलाए' वाली अवस्था प्राप्त कर ली थी। तभी तो वे अपनी आंखों के सामने पुत्र को शहीद होता देख परमात्मा की रज़ा जानकर सहन कर गए। जल्लाद समझ रहा था कि बच्चे की बोटियां करके उसकी आंतों का हार बाबा बंदा सिंघ बहादुर के गले में डालने से शायद वे घबरा जाएंगे। उसको क्या मालूम था कि बाबा जी तो अपनी रूह को गुरु-शब्द में लीन कर पहले ही निर्भयता का आभूषण धारण किए हुए हैं :

सबदु सुरति लिव लीणु होइ अनभउ अघड़ घड़ाए गहणा ।(वार भाई गुरदास जी, १८:२२)

बाबा बंदा सिंघ बहादुर वो रूह थी जो प्रभु-मिलाप के लिए *''तनु मनु काटि काटि सभु अरपी''* की अर्ज़ करती है। जल्लाद द्वारा गर्म सलाखों से आंखें निकालना साधारणजन के लिए तो बड़ी दुखदाई बात है, मगर बाबा जी तो उस मुकाम पर पहुंचे हुए थे जहां प्रभु-मिलाप के लिए *''अखी काढि धरी चरणा तलि''* की अर्ज़ की जाती है। कुछ समय बाद ही तो सदैवकालीन प्रभु-मिलन की घड़ी आने वाली थी। अगर पिता की गोद में बैठाकर पुत्र को बोटी-बोटी किया जा रहा था तो कुछ समय बाद दोनों पिता-पुत्र ने गुरु-पिता की गोद में जाकर

विराजमान होना था। ज़ालिमों को गुरु तथा सिक्ख की प्रीति की कद्र नहीं थी। वे अनजान लोग कह रहे थे कि इसलाम कबूल कर लो तो जान बख़्श दी जाएगी। 'शूरवीर वचन के बली' बाबा बंदा सिंघ बहादुर के अंदर तो गुरु-शब्द चल रहा था :

मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ।।
जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ।।१ ।।
माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ।।
बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ।। *(पन्ना ३९६)*

ज़ालिम प्रभु-चरणों में लीन बाबा बंदा सिंघ बहादुर को तन की यातनाओं द्वारा डराने की असफल कोशिश कर रहा था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर गुरबाणी में ध्यान जोड़कर उच्चारण कर रहे थे :

मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ।।
चरन कमल चितु रहिओ समाइ ।। *(पन्ना ११६२)*

कर्म-वीरता तथा धर्म-वीरता में निपुण बाबा बंदा सिंघ बहादुर की आध्यात्मिक अवस्था तो *''तिथै जोध महाबल सूर ।।''* वाले मंडल तक पहुंची हुई थी । परमात्मा का नाम उनके हृदय में समाया होने के कारण वे *''ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ।।''* वाले मुकाम पर पहुंच कर मृत्यु के भय को खत्म कर चुके थे, इसलिए वे बेखौफ होकर अपने मिशन *''जो सूरा तिस ही होइ मरणा ।।''* को प्रभु-रज़ा में रहते हुए पूरा कर गए।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर गुरु जी के हुक्म से नांदेड़ की धरती से पंजाब आए। गुरु के हुक्म में रहकर जुल्म का अंत किया तथा धैर्य, सब्र तथा शुक्राने में रहकर, शहादत प्राप्त कर गुरसिक्खी कमा गए :

हुकमी बंदा होइ कै खसमै दा भाणा तिसु भावै । . . .
गुरु सिखी गुरु सिखु कमावै ।। *(वार, भाई गुरदास जी, २८:१६)*

मानव जीवन के लिए प्रकाश-स्तंभ : श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी

*-डॉ. परमजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में अमूल्य, अमर तथा अद्वितीय देन से मानवता को कृतार्थ करने वाले, सर्वसाझीवालता (सर्वमान्यता) के प्रेरक, शांति तथा विनम्रता के पुंज, *''प्रभ मिलणै की एह नीसाणी।। मनि इको सचा हुकमु पछाणी।।''* तथा *''सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई।।''* के अनुसार गर्म तवी पर बैठकर, ऊष्ण रेत को शीश पर डलवाकर शहादत प्राप्त करने वाले श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म वैसाख वदि ७ १९ बैसाख, संवत् १६२० तद्नुसार १५ अप्रैल, सन् १५६३ को गोइंदवाल साहिब में पिता श्री गुरु रामदास जी तथा माता बीबी भानी जी के घर हुआ। बचपन से ही नाना श्री गुरु अमरदास जी के असीम स्नेह तथा उनसे प्राप्त ज्ञान के कारण उच्च मानवता के सारे गुण आप में प्रकट होने लगे थे। श्री गुरु अरजन देव जी का गुरबाणी के प्रति अटूट प्रेम देखकर श्री गुरु अमरदास जी ने 'दोहिता, बाणी का बोहिता' कहकर आशीर्वाद दिया।

आप १८ वर्ष की आयु में गुरुआई पर सुशोभित हुए तथा श्री गुरु रामदास जी द्वारा प्रारंभ किये गए कार्यों को सम्पूर्ण करने में लग गए। अमृत सरोवर के मध्य बनने वाले श्री हरिमंदर साहिब की नींव लाहौर के पीर साँई मियां मीर जी से रखवाकर साझीवालता की मिसाल कायम की । उच्च आत्मिक जीवन के पथ-प्रदर्शक, मुक्ति-दाता श्री गुरु ग्रंथ साहिब को तैयार कर, १६०४ ई. में इसका पहला प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर साहिब में कर, बाणी को सम्मान प्रदान किया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने ३० रागों में बाणी उच्चारण की। आपकी बाणी मनुष्य जीवन के बहुत निकट है। यह मनुष्य जीवन की ज्वलंत समस्याओं का समाधान करती हुई मनुष्य को पग-पग पर सचेत करती है।

आज मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुंचकर, सुख के विविध साधनों को संचित करके भी मानसिक तनाव में रहता हुआ बहुत सारे रोगों से पीड़ित है तथा चाहते हुए भी उसे मानसिक शांति प्राप्त नहीं होती। श्री गुरु अरजन देव जी मानसिक अशांति का कारण बताते हुए समझाते हैं कि सुख हेतु मनुष्य अनेक (सांसारिक) यत्न तो करता है किंतु परमात्मा, जो सुखों का सागर है, उसे याद नहीं करता :

आहर सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ ।।
नानक जितु आहरि जगु उधरै विरला बूझै कोइ ।।
(पन्ना ९६५)

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— फोन : ९८१२३-५८१८६*

जिस प्रभु ने उद्यम करने के लिए हाथ, पैर, कान, नेत्र आदि दिए हैं, उसे भुलाकर मनुष्य अन्य कार्यों में उलझा हुआ है :

दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ।।
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ।।

(पन्ना २६७)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार परमात्मा के नाम का सिमरन करना ही जीवन का लक्ष्य है। इस वास्तविकता को न समझने वाले आत्मघाती बन जाते हैं :

दुलभ देह पाई वडभागी ।।
नामु न जपहि ते आतम घाती ।। (पन्ना १८८)

वास्तव में दुनिया के सारे रूप, रंग, खुशियां, मनोरंजन के साधन आत्मिक जीवन के मार्ग में बाधक हैं, छिद्र हैं। इनमें लिप्त मनुष्य आत्मिक उन्नति नहीं कर सकता । कभी उसके द्वारा मोह का समुद्र पार नहीं किया जाता तो कभी वो लोभ की खाई में गिर जाता है। खाई में से निकलता है तो अहंकार का पत्थर आगे आ जाता है। परमात्मा का नाम सारी खुशियों, सारे सुखों का खजाना है, आत्मिक स्थिरता का आधार है :

रूप रंग खुसीआ मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ।।
हरि का नामु निधानु कलिआणा
सूख सहजु इहु सारा ।। (पन्ना १००३)

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य को सन्यास ले लेना चाहिए । मनुष्य को इस संसार में रहकर, अपने सारे कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए अपना आत्मिक जीवन संवारना है, सदैव परमात्मा को याद रखना है। गुरु जी के मत में परमात्मा के नाम के बिना जितनी भी आयु बीतती है वह इस प्रकार होती है जैसे सांप अपनी आयु बिताता है । सांप की आयु चाहे लंबी होती है परंतु वह सदैव अपने अंदर विष पैदा करता रहता है। नाम-विहीन मनुष्य भी अपने अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का ज़हर एकत्र करता रहता है तथा सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य प्राप्त करके भी अंत में जीवन की बाज़ी हार कर चला जाता है :

बिनु सिमरन जो जीवनु बलना
सरप जैसे अरजारी ।।
नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ।।

(पन्ना ७१२)

ऐसे मनुष्य सदा सूली पर चढ़े हुए चोर की भांति मौत से डरते रहते हैं :

विसारेदे मरि गए मरि भि न सकहि मूलि ।।
वेमुख होए राम ते जिउ तसकर उपरि सूलि ।।

(पन्ना ३१९)

परमात्मा का दर छोड़कर किसी अन्य की चाकरी करनी, बनावटी संतों, ज्योतिषियों के द्वार पर भटकना अपनी जिंदगी के समय को व्यर्थ गंवाना है :

बिनु प्रभ सेव करत अन सेवा बिरथा काटै काल ।।

(पन्ना १२२२)

गुरु जी ने हमें एक परमात्मा का आश्रय लेना सिखाया है। सुलही खान द्वारा हमला करने की ख़बर सुनकर तथा साहिबज़ादे श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के अस्वस्थ होने पर श्री गुरु अरजन देव जी ने परमात्मा का आश्रय लेकर हमें प्रभु पर विश्वास करने की शिक्षा दी है तथा

समझाया है कि जहां अन्य सभी सहारे विफल हो जाएं वहां परमात्मा सफलतापूर्वक सहायता करता है-- ''तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥'' इसलिए अकाल पुरख पर पूर्ण भरोसा रखना चाहिए :

एको जपीऐ मनै माहि इकस की सरणाइ ।।
इकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही जाइ ।।
(पन्ना ९६१)

दुख, संताप, क्लेश, डर, जन्म-जन्मांतरों की गरीबी, बड़े-बड़े विवाद, यहां तक कि किए गए महापाप भी सच्चे दिल से परमात्मा का सिमरन करने से उसी तरह मिट जाते हैं जैसे अग्नि लकड़ी को राख बना देती है :

घोर दुख्यं अनिक हत्यं
जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ।।
मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम
नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ।।
(पन्ना १३५५)

सांसारिक धन की तुलना में नाम-धन अमूल्य है। प्रभु का सिमरन करने वाले ही सम्मान प्राप्त करते हैं। वे कभी किसी के मुहताज नहीं होते :

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ।।
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ।।
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ।।
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ।।
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ।।
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ।।
(पन्ना २६३)

नाम का बल प्राप्त करके जन्म से मरण तक के सारे फिक्र मिट जाते हैं। मनुष्य माया में रहता हुआ भी माया से निर्लेप रहता है। वह दयालु हो जाता है। अपने तथा पराये का भेद नहीं रहता। परमात्मा प्रत्येक शरीर में व्यापक दिखाई देता है :

करि किरपा दीओ मोहि नामा
बंधन ते छुटकाए ।।
मन ते बिसरिओ सगलो धंधा
गुर की चरणी लाए ।। (पन्ना ६७१)

गुरु जी दृढ़ करवाते हैं कि इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए परमात्मा पर पूर्ण विश्वास होना ज़रूरी है। चाहे कोई इच्छा पूरी न हो या कोई नुकसान हो जाए, विश्वास कम नहीं होना चाहिए। मनुष्य प्रभु से असीम पदार्थ प्राप्त करता है, परंतु यदि कोई एकाध मांग पूरी न हो तो विश्वास खो देता है।

यदि परमात्मा एक वस्तु भी न दे तथा पहले दी हुई (दस वस्तुएं) भी वापस ले ले तो मूर्ख जीव क्या कर सकता है? जिस प्रभु पर कोई ज़ोर नहीं चल सकता उसे सदैव नमस्कार ही करनी चाहिए :

दस बसतू ले पाछै पावै ।।
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ।।
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ।।
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ।।
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ।।
ता कउ कीजै सद नमसकारा ।। (पन्ना २६८)

मन को दृढ़ करने का तरीका बताते हुए गुरु पातशाह अमृत बेला में उठकर प्रभु का ध्यान धरने तथा नाम-सिमरन करने की ताकीद करते हैं :

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना

मन तन भए अरोगा ।।
कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा
प्रगटे भले संजोगा ।। *(पन्ना ६११)*

अमृत बेला प्रभु-चरणों में बिताकर शेष समय में भी चलते-फिरते, उठते-बैठते, हर समय परमात्मा को याद रखना जरूरी है :

चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्रु रिदै चितारि ।।
(पन्ना १००६)

गुरु जी समझाते हैं कि यदि मन विकारों द्वारा मलिन है, अंदर झूठ है, छल-कपट, लोभ के अधीन होकर गलत काम किये जाते हैं, दूसरों का बुरा सोचने की आदत है, दुर्व्यवहार करने का स्वभाव है तो तन को पवित्र करने से मन पवित्र नहीं होता :

सोच करै दिनसु अरु राति ।।
मन की मैलु न तन ते जाति ।। *(पन्ना २६५)*

परमात्मा के विश्वास के बिना सारे कर्म-धर्म पाखंड बन जाते हैं। परमात्मा का नाम जपना तथा आचरण पवित्र बनाना सारे धर्मों से श्रेष्ठ धर्म है :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ।।
हरि को नामु जपि निरमल करमु ।।
(पन्ना २६६)

आचरण की पवित्रता के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्ति ज़रूरी है। जब तक अंदर 'मैं' की भावना है, प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती। विनम्रता वाला स्वभाव बनाकर ही आत्मिक आनंद की प्राप्ति हो सकती है तथा प्रभु का सामीप्य प्राप्त हो सकता है :

काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना
ता महि सुखु नही पाईऐ ।।
होहु रेन तू सगल की मेरे
मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ।।(पन्ना ६१४)

कर्तापन के अहंकार से रहित होकर स्वयं को प्रभु को समर्पित करके प्रभु की रज़ा में रहना ही वास्तविक आराधना, जप, तप तथा ज्ञान है :

इही अचार इही बिउहारा
आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी ।।
जो इहु मंत्रु कमावै नानक
सो भउजलु पारि उतारी ।। *(पन्ना ३७७)*

आज कर्म के बारे में अपने दृष्टिकोण को बदलने की ज़रूरत है। गुरु साहिब के अनुसार भक्ति, प्यार, सेवा, पवित्रता, परोपकार, संतोष तथा सच्चाई धर्म के आधारभूत तत्त्व हैं। गुरु जी दृढ़ करवा रहे हैं कि भले कार्य में देर न करनी, परमात्मा को याद रखना, पर-धन, पर-स्त्री का लालच न करना, निंदनीय कर्मों का त्याग करना, धर्म के लक्षण हैं :

नह बिलंब धरमं बिलंब पापं ।।
द्रिड़ंत नामं तजंत लोभं ।।
सरणि संतं किलबिख नासं
प्रापतं धरम लख्यिण ।।
नानक जिह सुप्रसंन माधवह ।। (पन्ना १३५४)

निंदा सुनने वाले कान, पर-धन की लालसा रखने वाले हाथ, पराये नुकसान के लिए आगे बढ़ने वाले पैर आदि शरीर के सारे अंग जो गलत रास्ते पर चलते हैं, व्यर्थ हैं :

मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ।।
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ।।

मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ।।
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ।।
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ।।
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ।।
(पन्ना २६८)

मनुष्य लोगों से छिपकर छल-कपट करता है, मगर यह नहीं समझता कि परमात्मा सब कुछ जानता है :

तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ।।
(पन्ना ५४६)

झूठ के मार्ग पर चलते हुए नाम-सिमरन का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता । सत्य के मार्ग पर चलने का स्वभाव बनाने के लिए मन की मति का त्याग करके गुरु की शरण लेनी जरूरी है :

इतु मारगि चले भाईअड़े
गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ।।
तिआगें मन की मतड़ी
विसारें दूजा भाउ जीउ ।।
इउ पावहि हरि दरसावड़ा
नह लगै तती वाउ जीउ ।।
हउ आपहु बोलि न जाणदा
मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ।। (पन्ना ७६३)

अर्थात् इस रास्ते पर जो गुरु-भाई चलते हैं वे गुरु द्वारा बताया गया कार्य करते हैं। अपनी बुद्धि का अहंकार, अपने मन की मति का त्याग करके, प्रभु के अतिरिक्त अन्य माया आदि का मोह भूलकर प्रभु का दर्शन प्राप्त किया जा सकता है । यही गुरु का आदेश है।

गुरु की शरण में आकर दुविधा समाप्त हो जाती है। हमारे लिए गुरबाणी ही गुरु है । गुरबाणी के सिद्धांतों के अनुसार जीवन बनाने से मन में से अहंकार की मैल उतर जाती है, मन स्थिर हो जाता है। मनुष्य किरत करता हुआ माया के मोह से निर्लिप्त होकर संसार-समुद्र की विकारों वाली लहरों से पार हो जाता है। जो प्राणी गुरु द्वारा बताये गए मार्ग पर नहीं चलता उसका जीवन धिक्कारयोग्य है। श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार वह मूर्ख व्यक्ति कुत्ते, सूअर, सांप, गधे तथा काक के तुल्य है :

गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी
ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ।।
कूकरह सूकरह गरधभह काकह
सरपनह तुलि खलह ।। (पन्ना १३५६)

शराब आदि नशे का सेवन करने वालों के लिए गुरु जी का आदेश है कि जो इसे पीते हैं वे दुर्बुद्धि वाले दुराचारी हो जाते हैं तथा विकारों में लिप्त रहने से पागलों जैसा व्यवहार करते हैं लेकिन जो नाम-रस पीते हैं उनको परमात्मा के नाम की लगन लग जाती है :

दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ।।
राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ।।
(पन्ना ३९९)

आधुनिक युग में शरीर का शृंगार करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। चंचलता को बढ़ाने वाले शृंगार करने से विकार बढ़ जाते हैं, इसलिए ये गुरमति में वर्जित हैं। गुरु के आदेश के अनुसार चलने वालों को सत्य, संतोष, दया, धर्म आदि का शृंगार ही शोभा देता है :

सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ।।
सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ।।
(पन्ना ८१२)

आज समाज में गंदे, लचर गीतों को गाने तथा सुनने का चलन बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण नौजवान पीढ़ी अपने संस्कारों को भूलकर गलत रास्ते पर जा रही है। गुरु साहिब समझा रहे हैं :

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ।।
साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ।।
(पन्ना ८२०)

अर्थात् परमात्मा से टूटे हुए मनुष्य, जो गंदे गीत, नाद तथा ध्वनियों के बोल बोलते हैं, वे आत्मिक जीवन के लिए व्यर्थ हैं । हे मेरे मोहन (प्रभु) ! ऐसे बोल मेरे कानों में न पड़ें। मानसिक सुख तथा शांति का मंत्र दृढ़ करवाते हुए गुरु जी बताते हैं कि अपने मन में दूसरों का बुरा करने के बारे में मत सोचो, तो तुम कभी दुखी नहीं हो सकते :

पर का बुरा न राखहु चीत ।।
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ।। (पन्ना ३८६)

जो अपने मन से बुराई को मिटा लेते हैं उनको सभी अपने मित्र दिखाई देते हैं :

मन अपुने ते बुरा मिटाना ।।
पेखै सगल स्रिसटि साजना ।। (पन्ना २६६)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन तथा बाणी कलियुग के जीवों के लिए प्रकाश-स्तंभ है, उपदेश है, जो मायूस लोगों में नवजीवन का संचार करके स्वाभिमान के साथ जीवन जीने का ढंग ही नहीं सिखाती, वरन् विकारों से पूर्ण संसार-सागर में डूब रहे मनुष्यों के लिए नाव का काम भी करती है :

कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू
सगल स्रिस्टि लगि बितरहु ।। (पन्ना १४०८)

आज के बदलते हालात में अपने मान-सम्मान तथा अस्तित्व को बनाए रखने के लिए यह ज़रूरी है कि हम दूसरों को दोष देने की आदत छोड़कर भेदभाव, बुद्धिमता, चतुराइयों को भुलाकर, गुरु जी के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने को अपनी गौरवमयी विरासत के साथ जोड़ें ! यह सत्य है कि जो प्रभु की कृपा-दृष्टि का पात्र बनता है तथा जिस मनुष्य पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि होती है वही गुरमति पर चलता हुआ अपने जीवन को सफल तथा आनंदमयी बनाता है :

जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि
तिनि गुरहि कमानो मंता ।। (पन्ना ६७२)

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब

-डॉ. मनजीत कौर*

भाई गुरदास जी अपनी एक वार में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की उपमा इस प्रकार करते हैं :

पंजि पिआले पंजि पीर
छठमु पीरु बैठा गुरु भारी।
अरजनु काइआ पलटि कै
मूरति हरिगोबिंद सवारी।
चली पीड़ी सोढीआ
रूपु दिखावणि वारो वारी।
दलि भंजन गुरु सूरमा
वड जोधा बहु परउपकारी। *(वार १:४८)*

इस वार की इस पउड़ी का टीका गिआनी हजारा सिंघ पंडित ने इस प्रकार किया है :-

१. पंजि पीर - श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी हैं। पंजि पिआले- सत्य, संतोष, दया, धर्म, धैर्य के पीये अर्थात् सतोगुण का बड़ा अभ्यास किया। छठमु पीरु- श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब गुरुआई पर विराजमान हुए।

२. श्री गुरु अरजन देव जी ने ही अपनी काया पलट कर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का स्वरूप धारण किया है।

३. (अब) सोढिओं की पीढ़ी (आगे) चल पड़ी है, बारी-बारी से (गुरु)रूप दर्शाएंगे।

४. यह छठम गुरु (मलेच्छों के) दलों को नष्ट करने वाला, बड़ा योद्धा और महान परोपकारी आया है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का प्रकाश शहीदों के सिरताज, शांति के पुंज, बाणी के बोहित श्री गुरु अरजन देव जी तथा माता गंगा जी के घर आषाढ़ वदि ७, २१ आषाढ़, संवत् १६५२ अर्थात् १९ जून, १५९५ ई. को गांव वडाली (गुरु की वडाली) जिला श्री अमृतसर साहिब में हुआ। इस संदर्भ में इतिहासकार लिखते हैं कि एक बार माता गंगा जी ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी से भेंट-वार्ता के लिए जाती हैं और वयोवृद्ध महापुरुष के लिए अत्यन्त श्रद्धा एवं प्रेम-भाव से अपने हाथों से लंगर तैयार कर ले जाती हैं। उस समय बाबा बुड्ढा जी खेत में हल चला रहे होते हैं। माता गंगा जी के आने की खबर पाकर तुरंत आकर बाबा बुड्ढा जी भी उतने ही प्रेम-भाव से लंगर-प्रशाद छकते हैं जितनी श्रद्धा एवं प्रेम-भाव से माता जी लंगर तैयार करके लाए थे। इस दौरान जैसे ही बाबा जी अपने हाथों से प्याज फोड़ते हैं, तभी स्वाभाविक रूप से उनके पावन मुखारबिंद से

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

ये वचन निकलते हैं–– ''माता जी! आपके घर जन्म लेने वाला पुत्र भी ऐसे ही वैरियों के सिर फोड़ेगा।''

गुरु जी का बाल्य-काल : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पावन प्रकाश पर हर तरफ खुशी की लहर थी, लेकिन श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ताऊ प्रिथीचंद और ताई करमो को इनका जगत में आना हरगिज बर्दाश्त नहीं था। ईर्ष्यालु प्रवृत्ति के कारण उन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को बाल अवस्था में ही जानी नुकसान पहुंचाने के अनेक यत्न किए, लेकिन अकाल पुरख वाहिगुरु की अपार कृपा-दृष्टि से गुरु जी का कोई बाल भी बांका न कर सका। एक बार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को भयानक रूप से चेचक निकल आई। संगत ने श्री गुरु अरजन देव जी को (उस समय की प्रचलित रीति के अनुसार) शीतला पूजने की सलाह दी, परंतु गुरु जी के वचन थे–– ''जिसने कष्ट दिया है, वही (ईश्वर) इसका निवारण भी करेगा। प्रभु-नाम की बरकत से समस्त दुखों का निवारण हो जाता है।'' थोड़े दिन के पश्चात् श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पूर्णतया स्वस्थ हो गए। पिता श्री गुरु अरजन देव जी ने अकाल पुरख का शुक्राना करते हुए पावन शबद उच्चारण किया :

सदा सदा हरि जापे ।।
प्रभ बालक राखे आपे ।।
सीतला ठाकि रहाई ।।
बिघन गए हरि नाई ।।. . . (पन्ना ६२७)

पूर्णतया स्वस्थ होने के उपरान्त पिता-गुरु जी द्वारा आप जी की शिक्षा-व्यवस्था की सम्पूर्ण जिम्मेदारी भाई गुरदास जी को सौंपी गई। शस्त्राभ्यास, घुड़सवारी, नेजाबाजी आदि में पारंगत आप बाबा बुड्ढा जी की देखरेख में हुए। आने वाले समय की नज़ाकत को समझते हुए पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा करवाई गई शिक्षा-दीक्षा के फलस्वरूप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का व्यक्तित्व अत्यधिक प्रभावशाली बना।

मीरी-पीरी की दो कृपाणें धारण करना : श्री गुरु अरजन देव जी ने जहाँगीर के बुलावे पर लाहौर जाने से पूर्व (भविष्य काल की गतिविधियों को मद्देनज़र रखते हुए) १६०६ ई. में बाबा बुड्ढा जी को आदेश दिया कि हमारे बाद गुरुआई पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को आसीन किया जाए। उस समय आपकी आयु मात्र ग्यारह वर्ष थी। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद सिक्ख इतिहास में एक क्रांतिकारी मोड़ आया। पिता-गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए आप जी ने 'मीरी' और 'पीरी' की दो कृपाणें धारण करवाने हेतु बाबा बुड्ढा जी से आग्रह किया। इसे बाबा बुड्ढा जी ने सहर्ष स्वीकार किया और आपको 'पीरी' के साथ 'मीरी' की कृपाण भी धारण करवाई गई, जिसके परिणामस्वरूप आपका व्यक्तित्व मीरी व पीरी, भक्ति व शक्ति, संत और सिपाही के गुणों से समन्वित हो गया। एक कृपाण आत्मिक मण्डल का नेतृत्व करने वाली तथा दूसरी सांसारिक विषयों को दिशा

देने वाले प्रतीक रूप में प्रसिद्ध हुई। इस संदर्भ में भाई अब्दुल्ला द्वारा गायन की गई वार उल्लेखनीय है :

दो तलवारां बद्धीआं,
इक मीरी दी इक पीरी दी।
इक अज़मत दी, इक राज दी,
इक राखी करे वज़ीरी दी।
हिम्मत बाहां कोट गढ़,
दरवाज़ा बलख बखीर जी।
कोट सिपाही नील नल,
मार दुषटां करे तागीर जी।
पग्ग तेरी, की जहांगीर दी ?

मीरी-पीरी का सदुपयोग : प्रिंसीपल हरिभजन सिंघ अपनी पुस्तक 'दस गुर-रतनावली' में इस संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं कि छठम गुरु जी ने मीरी (शक्ति) तथा पीरी (भक्ति) की दो कृपाणें धारण कीं। इस प्रकार न केवल सिक्ख फौज की नींव रखी, अपितु भक्ति एवं शक्ति का अति अत्तम, अति महत्वपूर्ण सुमेल प्रस्तुत किया। भारत में 'भक्ति' समय पाकर वहम-भरपूर अहिंसा एवं कायरता में तबदील हो चुकी थी और सत्य, संतोष, प्रेम, दया आदि सद्गुणों से रहित 'शक्ति' ने जोर, जुल्म, पक्षपात, कठोरता, लोभ आदि अवगुणों का विकराल रूप धारण किया हुआ था। गुरु जी ने दोनों का सही प्रयोग करना सिखाया। शक्ति का प्रयोग किसी स्वार्थ अधीन नहीं, बल्कि भक्ति अथवा धर्म चलाने हेतु होना चाहिए, इस प्रकार की मानसिकता दृढ़ करवाई।

वास्तव में सिक्खी में धर्म न केवल राजनीति की आधारशिला है, अपितु जीवन के हर पहलू का आधार भी धर्म ही है। 'मीरी' की कृपाण का प्रयोग सदैव 'पीरी' की सुरक्षा के लिए होना चाहिए। मुख्य निशान 'पीरी' अथवा 'धर्म' ही है। हर परिस्थिति में इसकी स्थापना एवं सुरक्षा हेतु 'मीरी' का प्रयोग किया जाना जायज है, श्रेयस्कर है।

सिक्खों में वीर रस का संचार : गुरुआई पर विराजमान होते ही गुरु जी ने सिक्खों को हुकमनामे भेजना शुरू किए, जिसमें आप जी द्वारा हिदायत की गई कि अब से गुरु-घर में भेंटस्वरूप शस्त्र, उत्तम किस्म के घोड़े आदि लाए जाएं। इसके अतिरिक्त श्री अमृतसर साहिब में एक किले 'लोहगढ़' का निर्माण भी करवाया।

श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अकाल पुरख का तख्त स्थापित किया, जो सृष्टि का सृजक है और समस्त जीवों की प्रतिपालना करने वाला तथा सर्वोच्च न्यायाधीश है। गुरबाणी आशयानुसार :

एको हुकमु वरतै सभ लोई।।
एकसु ते सभ ओपति होई।। *(पन्ना २२३)*

श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना सिक्ख इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। आरंभ में इसे 'अकाल बुंगा' कहा जाता था। इसके निर्माण में गुरु जी के साथ भाई गुरदास जी तथा बाबा बुड्ढा जी का विशेष सहयोग रहा। महत्वपूर्ण तथ्य इस संदर्भ में यह है कि

यह समय वो था जब तत्कालीन बादशाह जहांगीर का हुक्म था कि कोई अपना निजी स्थान, चबूतरा अथवा मंच तीन फुट से ऊँचा नहीं बनवा सकता। इस घोषणा के बिल्कुल विपरीत गुरु जी ने क्रांतिकारी कदम उठाया। उन्होंने श्री हरिमंदर साहिब के सामने १२ फुट ऊँचा तख्त स्थापित किया। इस प्रकार श्री अकाल तख्त साहिब सिक्ख पंथ को धर्मनीति और राजनीति से जोड़ने वाला एक सक्षम माध्यम है। गुरु जी स्वयं तख्त पर बैठ कर समस्त पंथक निर्णय लेते। सेवक-भाव से विचरण करते हुए राजनेता के रूप में कार्यशील रहते तथा सैन्य-शक्ति का निरीक्षण करते; राजनीति से सम्बन्धित समस्त हुकमनामे और आदेश जारी करते। इन्हीं हुकमनामों की बदौलत सिक्ख पंथ के गौरवशाली इतिहास की सृजना हुई।

यहां पर झूलते-लहराते दो केसरी निशान साहिब सिक्ख पंथ की आध्यात्मिक शक्ति और राजनीतिक शक्ति अर्थात् पीरी और मीरी के प्रतीक एवं सजग प्रहरी हैं।

बंदी-छोड़ दाता : समय के बादशाह जहांगीर को गुरु-घर की ताकत और रुतबा खटकने लगा था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की बहादुरी, आध्यात्मिक व राजनीतिक शक्ति तथा विशेष तौर पर फौज की तैयारी (सैन्य-शक्ति) से वह बुरी तरह से भयभीत था। कपटपूर्ण ढंग से जहांगीर ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को ग्वालियर के किले में कैद करवा दिया। ५२ हिंदू राजा पहले से इस किले में नजरबंद थे। गुरु जी को नजरबंद करते ही जहांगीर भयानक मानसिक रोग से ग्रसित हो गया। उसका दिन का चैन और रातों की नींद उड़ गई थी। इस दौरान सूफी संत साँई मियां मीर जी, जो कि गुरु-घर के अनन्य श्रद्धालु थे और जिनसे पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब की नींव रखवाई थी, के आख्यान ने जहांगीर को अंदर तक झकझोर दिया। उनके वचन थे-- ''जहांगीर! तू बड़ा गुनाहगार है। खुदा तुझे कभी माफ नहीं करेगा।'' यह सुनकर जहांगीर घबरा गया और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को रिहा करने का आदेश पारित कर दिया। गुरु जी का वक्तव्य था कि जब तक इन ५२ राजाओं को भी रिहा नहीं करोगे, तब तक हम भी रिहा नहीं होंगे।

लंबे विचार-विमर्श के बाद जहांगीर ने कहा, जितने राजा आपका दामन (चोला, चोगा) पकड़ कर बाहर आ सकेंगे, उन्हें रिहा कर दिया जाएगा। गुरु जी ने ५२ कलियों वाला चोला सिलवाया। बावन के बावन राजा एक-एक कली पकड़ कर किले से बाहर आ गए। तब से आपको 'बंदी-छोड़ दाता' कहा जाने लगा।

गुरु जी पर किए गए चार आक्रमण बनाम चार युद्ध : जहांगीर की मृत्यु के उपरान्त शाहजहां सिंहासन पर बैठा। उसका व्यवहार सिक्खों के प्रति और भी कठोर था। उसने चार बार हमलावर बना कर अपने जरनैल व फौज भेजी। बदी की ताकतों को कुचलने हेतु गुरु

जी ने डट कर मुकाबला किया और इन धर्म-युद्धों में विजय हासिल की। अपना राज्य स्थापित करने के लिए नहीं, अपितु जुल्म और अन्याय के विरुद्ध थे ये युद्ध। कृपाण अथवा शक्ति का प्रयोग इसी माहौल में धर्म की रक्षा हेतु था, जिसकी रक्षा शांति के पुंज श्री गुरु अरजन देव जी ने अद्वितीय शहादत देकर की थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को मुगल सेना के विरुद्ध चार युद्ध लड़ने पड़े, जिनमें सर्वप्रथम आक्रमण सदैव विरोधियों की तरफ से ही होता रहा। इतिहासकारों की खोज के अनुसार विशेष तथ्य यह है कि गुरु जी ने किसी भी इलाके पर कब्जा नहीं किया। कारण स्पष्ट है कि ये युद्ध संप्रभुता, मानसिक स्वतंत्रता धर्म एवं स्वाभिमान की रक्षार्थ थे।

धर्म-प्रचार : युद्धों के उपरांत आपने कीरतपुर साहिब जा निवास किया। फिर धर्म-प्रचार हेतु पंजाब, कश्मीर, उत्तर प्रदेश के इलाकों में गए और वहां जाकर श्री गुरु नानक देव जी द्वारा बताए गए धर्म-सिद्धांतों का प्रचार किया। वहां लाखों हिंदू और मुसलमान गुरु-घर के साथ आ जुड़े।

गुरु जी ने अपने सिक्खों को तन-मन से स्वस्थ रहने की प्रेरणा दी। एक ओर गुरु जी सिक्खों को सशस्त्र करना चाहते थे वहीं दूसरी ओर आत्मिक बल हेतु गुरबाणी पढ़ने और मनन करने हेतु प्रेरित भी करते थे। गुरबाणी के प्रति गुरु जी की अपार श्रद्धा-भावना का प्रसंग यहां उल्लेखनीय है :-

एक बार गुरु जी संगत को मुखातिब होकर फरमान करते हैं कि अगर कोई गुरसिक्ख हमें एकाग्रचित्त होकर प्रेम-भाव से जपु जी साहिब बाणी का पाठ सुनाएगा तो उसे मनोवांछित पुरस्कार दिया जाएगा। इस पर संगत में मौजूद भाई गोपाला ने यह सेवा अपनी झोली में डलवाई।

गुरु जी से आज्ञा एवं आशीर्वाद लेकर जपु जी साहिब का पाठ पूर्ण श्रद्धा-भावना से प्रारंभ किया। भाई गोपाला को तन्मयता से पाठ करते हुए देखकर गुरु जी मन में विचार करते हैं कि बाणी का इतनी खूबसूरती से, लगन से पाठ सुनाने वाले को मैं क्या देकर पुरस्कृत करूं! गुरु जी अपने आसन से उठने लगते हैं और मन में निश्चय करते हैं कि इस सिक्ख को सच्चा तख्त (श्री गुरु नानक देव जी की गुरुगद्दी) ही प्रदान कर देंगे । दूसरी तरफ भाई गोपाला के मन में यह ख्याल बन गया कि लगता है कि गुरु जी प्रसन्न हो गए हैं। अब मैं इनसे अच्छी नस्ल का घोड़ा मांग लूंगा। गुरु जी ने भाई गोपाला की भावना को जाना और उनसे कहा कि "भाई गोपाला! हम तो तुम्हें वो 'वस्तु' देने वाले थे जिसके सामने दुनिया की हर ताकत बौनी है, मगर तुम भी अभी पदार्थवाद की दुनिया से बाहर नहीं निकल सके।" गुरु जी ने उसे उसका मनचाहा घोड़ा प्रदान कर उसे और भी आत्मिक उन्नति करने के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही गुरु जी ने पावन बाणी शुद्ध और श्रद्धा-भाव से पढ़ने-सुनने की महानता से संगत को अवगत कराया।

परम ज्योति में विलीन होना : १६४४ ई. में परम ज्योति में विलीन होने से श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने पोते श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरुआई सौंपने का एलान कर दिया।

बाबा बुड्ढा जी के पुत्र भाई भाना जी ने गुरुआई की रस्म अदा की और श्री गुरु हरिराय साहिब सप्तम गुरु के रूप में गुरु-पद पर सुशोभित हुए।

इस प्रकार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी-पीरी, भक्ति-शक्ति तथा शास्त्र व शस्त्र के अद्‌भुत सुमेल को विश्व के सम्मुख प्रकट किया, जिसके परिणामस्वरूप भारत का नक्शा बदला और इतिहास में एक क्रांतिकारी मोड़ आया। आपने राजनीतिक पक्ष से भारतीय लोगों को वास्तविक स्वतंत्रता का एहसास करवाया तथा दुखों-क्लेशों से मुक्त करवा कर आत्मिक आनंद प्रदान किया। आप १६४४ ई. में कीरतपुर साहिब में परम ज्योति में विलीन हो गए।

कविता

छठम सरूप गुरु नानक देव जी का,
गुरु हरिगोबिंद जी प्यारे !
शहीदों के सिरताज व पंचम पातशाह,
गुरु अरजन देव जी की आँखों के तारे !
बाबा बुड्ढा जी से मिली शस्त्रों की विद्या,
भाई गुरदास जी ने पढ़ाए शास्त्र सारे।
बने अकाल तख्त साहिब के रचयिता,
भक्ति-शक्ति के पालनहारे !
कहीं बने शेर सूरमा, कही पे रंग फकीरी।
इसलिए तो मान गए सब,
आपके पास थी मीरी-पीरी।
संत और सिपाही वाला, रूप विलक्षण धारा।
बदी की ताकतों को दिया, आपने जवाब करारा।
समय का बादशाह सह न सका,
सच्चे पातशाह का नूर।
ईर्ष्यावश ग्वालियर के किले में,
कैद कर लिए गए हुजूर।
साँई मियां मीर जी थे, सूफी-संत-पीर-फकीर।
सुनी खबर जब उन्होंने, तब हुए बड़े दिलगीर।
दिल्ली पहुंचे तत्काल,
जहांगीर को फटकार लगाई।
अति हो गई जुल्म की,
करो तुरंत गुरु जी की रिहाई !
आदेश आपकी रिहाई का, सिपाही लेकर आए।
लेकिन आप अकेले रिहा होकर,
बाहर नहीं थे आए।
५२ राजा जो वहां कैद थे, उन्हें भी छुड़वा लाए।
उसी दिन से आप 'दाता बंदी छोड़' कहलाए।
दिन आया दीवाली वाला,
जो 'बंदी छोड़ दिवस' कहलाए।
सिक्खों ने हर्षोल्लास से उस दिन,
घी के दीप जलाए।

भक्त कबीर जी की विचारधारा

-प्रो. नव संगीत सिंघ*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान के अलावा भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान तथा गुरसिक्खों की बाणी को भी शामिल किया गया है। इन भक्तों में से भक्त कबीर जी को श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रथम स्थान पर रखा है अर्थात् भक्त-बाणी के अंतर्गत भक्त कबीर जी की बाणी सर्वप्रथम स्थान पर दर्ज की गई है। आप १३९८ ई. में बनारस में पैदा हुए। आपकी परवरिश नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति ने की और आपका नाम 'कबीर' रखा। भक्त कबीर जी गृहस्थी थे। आपकी पत्नी का नाम लोई और पुत्र का नाम कमाल था। आप १२० वर्ष की आयु में सन् १५१८ ई. में मगहर में ब्रह्मलीन हुए।

भक्त कबीर जी व्यवसाय के रूप में कपड़ा बुनने का कार्य किया करते थे। उस समय का ब्राह्मण वर्ग आपको जुलाहा होने के कारण शूद्र समझता था।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज ३१ रागों में से भक्त कबीर जी की बाणी १७ रागों में संकलित है, जिनमें सिरी, गउड़ी, आसा, गूजरी, सोरठि, धनासरी, तिलंग, सूही, बिलावलु, गोंड, रामकली, मारू, केदारा, भैरउ, बसंतु, सारंग और प्रभाती राग शामिल हैं। आपके कुल २२५ शबद, १ बावन अखरी, १ थिती, १ सतवारा और २४३ सलोक संकलित हैं। इस प्रकार आप जी की बाणी अन्य सभी भक्त साहिबान की अपेक्षा अधिक है। डॉ. जोध सिंघ, डॉ. मोहन सिंघ दीवाना, डॉ. तारन सिंघ और राजकुमार वर्मा जैसे विद्वानों का मत है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल बाणी ही भक्त कबीर जी की असली बाणी है।

भक्त कबीर जी का समूचा जीवन बहुत ही पवित्र और शिक्षाप्रद था। वे अपने पिता के व्यवसाय में हाथ बटाते, मेहनत करते और प्रभु की भक्ति के लिए भी समय निकालते। आप जी की बाणी में बेकार के कर्म-कांडों, मूर्ति-पूजा के खंडन के साथ-साथ नैतिकता, प्रेम, भक्ति, निर्भयता, माया, सांप्रदायिक भावना आदि विचारों की निशानदेही हुई है।

भक्त कबीर जी सारी सृष्टि को एक ही परम ज्योति से पैदा हुई मानते हैं। सिक्ख धर्म के गुरु साहिबान की भाँति भक्त कबीर जी भी घट-घट में परमात्मा का नूर देखते हैं। भक्त कबीर जी के अनुसार सारी सृष्टि परमात्मा द्वारा निर्मित है। वो स्वयं इसमें समाया हुआ है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ

*प्रभारी, स्नातकोत्तर पंजाबी विभाग, गुरु काशी गुरमति कॉलेज, तलवंडी साबो, जिला बठिंडा—१५१३०२, फोन : ९४१७६-९२०१५

कुदरति के सभ बंदे ।।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ
कउन भले को मंदे ।।१ ।।
लोगा भरमि न भूलहु भाई ।।
खालिकु खलक खलक महि खालिकु
पूरि रहिओ स्रब ठांई ।। *(पन्ना १३४९)*

भक्त कबीर जी निडर शख़्सियत के मालिक थे। वे मानवता-विरोधी रिवायतों व रीतियों के सख़्त विरोधी थे। ब्राह्मणवाद के वर्ण-विभाजन पर जितनी कठोरता के साथ आप जी ने वार किया, उतना उत्तरी भारत के किसी अन्य संत-महात्मा ने नहीं किया। अपनी बाणी में उन्होंने तथाकथित ब्राह्मण वर्ग को सीधे तौर पर ललकारा :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ।।
तउ आन बाट काहे नही आइआ ।।२ ।।
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ।।
हम कत लोहू तुम कत दूध ।।
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ।।
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ।। *(पन्ना ३२४)*

भक्त कबीर जी के समय में कई प्रकार के नशों ने लोगों को जकड़ा के हुआ था, जो व्यक्ति के मन पर गलत प्रभाव डालते थे। हर तरह के नशे में विष होता है, जो व्यक्ति के शरीर को कुछ समय के लिए बेहोश कर उससे सामर्थ्य से अधिक या गलत काम करवाता है। भक्त कबीर जी ने नशे का सेवन करने वाले व्यक्ति को आचरण से गिरे हुए सिद्ध किया है :

कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि ।।
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जांहि ।।
(पन्ना १३७७)

भक्त कबीर जी की बाणी में डर या घबराहट को कोई स्थान प्राप्त नहीं है, बल्कि वे व्यक्ति को शक्तिशाली बनाना चाहते हैं, जो जंग-ए-मैदान में पुर्ज़ा-पुर्ज़ा होकर कट जाता है, मगर अपने धर्म की पालना हेतु पीठ नहीं दिखाता। ऐसे बहादुर ही रणभूमि में जूझते हुए कुर्बानी को प्राथमिकता देते हैं :

गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ।।
खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ।।१ ।।
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ।।
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ।।
(पन्ना ११०५)

भक्त कबीर जी मूर्ति-पूजा जैसे मिथ्या कर्मों में विश्वास नहीं रखते थे। उनके अनुसार जो लोग पत्थर की मूर्तियों की परमात्मा समझ कर पूजा करते हैं, उनकी पूजा निराधार है। मूक पत्थर परमात्मा नहीं हो सकता और न ही किसी पत्थर की मूर्ति में कोई दैवी शक्ति होती है। भक्त कबीर जी का फरमान है :

— जो पाथर कउ कहते देव ।।
ता की बिरथा होवै सेव ।।
जो पाथर की पांई पाइ ।।
तिस की घाल अजांई जाइ ।। *(पन्ना ११६०)*
— पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ।।
जिसु पाहन कउ पाती
तोरै सो पाहन निरजीउ ।।१ ।।

भूली मालनी है एउ।।
सतिगुरु जागता है देउ।। *(पन्ना ४७९)*

बनारस में रहने के कारण भक्त कबीर जी को इसलाम और हिंदू धर्म की कट्टरता और कर्मकांडों के बारे में निजी और गहरा अनुभव प्राप्त था। इसी कारण आप जी ने उन लोगों की गलत धारणाओं का पर्दाफाश किया। भक्त कबीर जी व्यक्ति को बाहर से या दिखावे के तौर पर बेहतर बनाने की जगह अंदरूनी तौर पर शुभ अमलों वाला इंसान बनाना चाहते थे, इसीलिए वे प्रभु को बाहर से ढूंढने की बजाय अंदर से खोजने की प्रवृत्ति पर ज़ोर देते थे। उनकी बाणी में नफ़रत, ईर्ष्या, शक की जगह प्यार, सहनशीलता और श्रद्धा के दीदार होते हैं। ये सभी ऐसे सदगुण हैं, जिन्हें सदाचारक और नैतिकता के घेरे में रखा जा सकता है।

भक्त कबीर जी की बाणी में से दृष्टिगोचर होते कुछ अन्य महत्वपूर्ण संकल्प निम्नलिखित पंक्तियों में से देखे जा सकते हैं :

— अलहु एकु मसीति बसतु है
अवरु मुलखु किसु केरा।।
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा।।
(पन्ना १३४९)

— कबीर सभ ते हम बुरे
हम तजि भलो सभु कोइ।।
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ।।
(पन्ना १३६४)

— कबीर मरता मरता जगु मूआ
मरि भी न जानिआ कोइ ।।
ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ ।।
(पन्ना १३६५)

— कबीर मानस जनमु दुलंभु है
होइ न बारै बार।।
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि
बहुरि न लागहि डार ।।
(पन्ना १३६६)

— कबीर मुहि मरने का चाउ है
मरउ त हरि कै दुआर।।
मत हरि पूछै कउनु है परा हमारै बार।।
(पन्ना १३६७)

— कबीर कालि करंता अबहि करु
अब करता सुइ ताल ।।
पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु।।
(पन्ना १३७१)

भक्त कबीर जी के समय में हिंदू, मुस्लिम, बुद्ध, जैन, नाथ, योगी आदि अपनी-अपनी जगह कार्यशील थे, परंतु उनके अगुआ लोक-कल्याण की जगह स्वार्थ में गलतान थे। वे कट्टरवादी विचारधारा के कारण एक दूसरे की भर्त्सना कर रहे थे। ऐसे माहौल में जगत को सदाचारक शिक्षा देना वास्तव में जोखिम वाला कार्य था। भक्त कबीर जी ने जनसाधारण के साथ सम्पर्क स्थापित कर लोक-काव्य और लोक-भाषा में बाणी के माध्यम से 'ब्रह्म-विचार' प्रस्तुत किया।

श्री अकाल तख़्त साहिब का ऐतिहासिक महत्व

-स. शमशेर सिंघ अशोक (दिवंगत)

सिक्ख पंथ में राजनीति और धर्म दोनों एकजुट होकर चलते आए हैं। श्री गुरु नानक साहिब ने सिक्ख पंथ रूप धर्म-राज्य की स्थापना सत्यता की मजबूत आधारशिला पर की थी, जैसे कि भाई सता और भाई बलवंड जी की वार राग रामकली में वर्णन है :

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै।।

(पन्ना ९६६)

दूसरी तरफ मुग़ल सम्राट बाबर ने अपनी हुकूमत की बुनियाद साम, दाम और दंड, भेद पर रखी थी, इसलिए मुग़ल हुकूमत के सिद्धांत सिक्ख धर्म के सिद्धांतों के साथ मेल नहीं खा सके। जब अकबर के बाद मुग़ल बादशाह जहाँगीर ने अत्याचार का रास्ता अपनाया और पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी को लाहौर बुला कर शहीद करवा दिया तो सिक्खों में ज़ुल्म के विरुद्ध भावना जागृत होना स्वाभाविक बात थी, जिस कारण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब (छठे पातशाह) ने गुरुआई पर आसीन होने के कुछ दिन के पश्चात् श्री हरिमंदर साहिब के सामने एक ऊँचा चबूतरा निर्मित कर आषाढ़ सुदी ५, संवत् १६६३ मुताबिक ३० जून, सन् १६०६ ई. को सिक्खों की राजनैतिक सरगर्मियाँ तेज़ करने के लिए बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी के सहयोग से श्री अकाल तख़्त साहिब की बुनियाद रख दी।

भाई केसर सिंघ छिब्बर के बंसावलीनामा के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की आयु उस समय लगभग १५ वर्ष थी। युवा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के कर-कमलों द्वारा स्थापित सिक्खों के इस राजनैतिक सिंहासन ने हर तरफ देश में सम्मान हासिल किया और यहाँ से जारी हुए हुकमनामों की प्रत्येक स्थान पर मन, वचन, कर्म से पालना होने लगी।

श्री अकाल तख़्त साहिब और ढाडी परंपरा : श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना होने पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने लगातार दरबार लगाना शुरू किया। चारों दिशाओं में हुकमनामे लिख कर भेजे। शस्त्र और घोड़े मंगवाए। गाँव सुरसिंघ से ढाडी अबदुल्ला और भाई नत्थ मल्ल को वीर योद्धाओं के उत्साहवर्धन हेतु वारें गायन के लिए मंगवाया। भट्टों ने वीर-रसी कवित्त पढ़ने शुरू किये। बड़े हर्षोल्लास के साथ हर तरफ़ फ़ौजी परेड होने लगी। दरबारी ढाडी भाई अबदुल्ला और भाई नत्थ मल्ल ने गुरु जी के हुक्कम से वीर-रस से भरपूर वारें सुणाईं।

श्री अकाल तख़्त साहिब का प्रबंधकीय ढांचा :

सन् १६०९ से १७६२ ई. तक : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपना दरबार श्री हरिमंदर साहिब के सामने श्री अकाल तख़्त साहिब के स्थान पर लगाते रहे। इसके बाद मुग़ल सम्राट शाहजहाँ के हुक्म द्वारा लाहौर से फ़ौजी आक्रमण होने पर गुरु साहिब पहले श्री अमृतसर साहिब से श्री हरिगोबिंदपुर, गुरूसर महिराज और करतारपुर (जलंधर) आदि स्थानों से होते हुए जब दरिया सतलुज पार कीरतपुर

साहिब पहुँचे तो इधर श्री हरिमंदर साहिब सहित श्री अकाल तख़्त साहिब पर मुग़ल हुकूमत की शह पर प्रिथीचंद के पुत्र मिहरबान का कब्ज़ा होने के बाद संवत् १७५३ बि. मुताबिक सन् १६९६ ई. में उसके पुत्र हरिजी के देहांत के बाद जब सोढी श्री अमृतसर साहिब छोड़ गए तो संगत द्वारा आग्रह करने पर श्री दशमेश जी ने श्री अनंदपुर साहिब से भाई मनी सिंघ जी को श्री अमृतसर साहिब पाँच सिंघों सहित यहाँ के प्रबंध के लिए भेजा। इससे श्री दरबार साहिब व श्री अकाल तख़्त साहिब का प्रबंध सुचारू रूप से चलने लगा और भाई मनी सिंघ जी यहाँ से माता सुंदरी जी के सहयोग से पंथक-एकता के लिए कई प्रकार के हुकमनामे लिख कर भाई गुलजार सिंघ आदि पाँच प्यारों के परामर्श से भेजते रहे और पंथक एकता के लिए जब कभी किसी समस्या का समाधान न होता तो वह फ़ैसला श्री दरबार साहिब के हजूर अरदास कर पर्ची-व्यवस्था के माध्यम से करते रहे। फिर भाई मनी सिंघ जी मुग़ल सरकार के हुक्म से बंद-बंद काट कर शहीद कर दिए गए।

खालसा दल, सिक्ख मिसलों के गुरमते : भाई मनी सिंघ जी के बाद खालसा दल, बूढ्ढा दल, तरुणा दल और सिक्ख मिसलों के समय सिक्खों में श्री अकाल तख़्त साहिब का महत्व बाकायदा कायम रहा और सभी पंथक निर्णय सर्वसम्मति के साथ होते रहे। जब कभी कोई बड़ी मुश्किल पैदा होने पर सर्वसम्मति होती नज़र आती तो पाँच प्यारों के नेतृत्व में दोनों पक्षों की अलग- अलग पर्चियां लिख कर एक बक्से में डाल दी जातीं। फिर वह बक्सा श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब के दरमियान पाँच प्यारों की मौजूदगी में अरदास कर एक पाँच वर्षीय बच्चे के हाथों खुलवाया जाता। जिसकी पर्ची पहले निकल आती, वही सर्वसम्मति के साथ विजेता माना जाता और उसकी राय सही मानी जाती थी।

इसी प्रकार पर्ची-व्यवस्था की भांति उस समय किसी मुश्किल मसले के हल के लिए गुरु-पंथ की सहमति से श्री अकाल तख़्त साहिब पर पंथक नेताओं द्वारा इत्तफ़ाक-परामर्श से गुरमता पारित किया जाता था। वह गुरमता चाहे किसी भी मुश्किल मसले के संबंध में होता, उसमें सभी पंथक जत्थों की सहमति उनके नुमायंदों के द्वारा ज़रूरी होती थी, जो प्रत्येक सभा से पूर्व आवश्यक रूप से प्राप्त की जाती थी। ऐसे गुरमते श्री अकाल तख़्त साहिब की हजूरी में पास किये जाते और फिर उन पर बाकायदा गुरु-दरबार की मुहर लगती थी।

सिक्ख मिसलों और सिक्ख-राज के समय श्री अकाल तख़्त साहिब के हालात : सन् १७३७ से सन् १७६२ तक श्री अकाल तख़्त साहिब की हजूरी में पंथक एकता को मुख्य रख कर हमेशा गुरु ख़ालसे में सर्वसम्मति ही प्रधान रही और सभी गुरमते इसी आदर्श को मुख्य रख कर परित किए जाते रहे। इसके बाद सन् १७६२ ई. में कुप्प रुहीड़ा के बड़ा घल्लूघारा के बाद अहमद शाह अब्दाली, श्री अकाल तख़्त साहिब सहित श्री दरबार साहिब को बारूद के साथ उड़ा कर और अमृत सरोवर को मलबे के साथ भर कर अपवित्र कर गया था, इसलिए इससे अगले वर्ष ही सिंघों ने सरहिन्द पर हमला कर पहले तो वहाँ के दुर्रानी सूबेदार जैन ख़ान और बाद में मुरिंडा के रंघड़ों को मारा और फिर श्री अमृतसर पहुँच कर संगत से धन-उगाही कर पहले श्री दरबार साहिब और फिर श्री अकाल तख़्त साहिब का नवनिर्माण किया। अमृत सरोवर से मलबा निकाल कर उसे साफ़ किया और पुनः

जल के साथ भरा।

सरबत ख़ालसा ने सर्वसम्मति के साथ गुरमता पारित कर श्री दरबार साहिब की सेवा-संभाल आदि का काम सिंघों को सौंपा और श्री अकाल तख़्त साहिब का इंतज़ाम बुड्ढा दल के निहंग सिंघों के हवाले किया, ताकि प्रबंध के नुक्ता-निगाह से कोई भी गड़बड़ पैदा न हो। उस समय श्री अकाल तख़्त साहिब की पहली मंज़िल सिक्ख मिसलों के सामूहिक सहयोग से तैयार हुई और बाकी ऊपरी चार मंज़िलें इसके बाद शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ ने बड़ी श्रद्धा सहित बनवाईं।

सिक्ख फौज के प्रसिद्ध जरनैल सरदार हरी सिंघ नलवा ने श्री अकाल तख़्त साहिब का ऊपरी सुनहरी गुंबद और बंगला तैयार करवाया। इसी समय सरदार हरी सिंघ नलवा ने एक लाख पच्चीस हज़ार रुपए अरदास करवा कर यह इच्छा प्रकट की कि श्री अकाल तख़्त साहिब की इस इमारत को सबसे सुंदर और बहुमूल्य बनाया जाये। सन् १८३७ में जमरौद (पिशावर) की जंग के समय वे शहीद हो गए।

सन् १८४५-४६ में सिक्खों की पहली लड़ाई और श्री अकाल तख़्त साहिब पर अंग्रेज़ों का कब्ज़ा : इसके बाद सन् १८४५-४६ में जब दरिया सतलुज के किनारे सिक्खों और अंग्रेज़ों की पहली लड़ाई हुई तो इस लड़ाई में डोगरों की साजिश के कारण अंग्रेज़ों की विजय हुई। उन्होंने लाहौर पहुँचते ही आदेश जारी कर श्री हरिमंदर साहिब का प्रबंध एक सरबराह के अधीन पुजारियों को सौंप दिया और श्री अकाल तख़्त साहिब निहंग सिंघों से लेने के लिए फ़ौजी हमला कर दिया, जिसमें बहुत-से निहंग सिंघ श्री अकाल तख़्त साहिब के सामने शहीद हो गए। श्री अकाल तख़्त साहिब का प्रबंध भी अंग्रेज़ हाकिमों ने सरकारी सरबराह के अधीन पुजारियों के हाथ में दे दिया, जिस कारण यहाँ की सारी गुरमति रहित मर्यादा धूमिल कर दी गई।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर और श्री अकाल तख़्त साहिब पर अकालियों का कब्ज़ा : सन् १८४६ के बाद लगभग ७५ वर्ष बीत जाने पर नवंबर सन् १९२० में सेंट्रल माझा खालसा दीवान कीरतनगढ़ (अमृतसर) और गड़गज्ज दीवान तरनतारन की लगातार जद्दोजहद के कारण गुरु के सिक्खों में जागृति आई, जिससे गुरुद्वारा प्रबंध सुधार के मुख्य उद्देश्य से सरदार तेजा सिंघ भुच्चर, सरदार करतार सिंघ झब्बर, भाई ढेरा सिंघ, भाई मताब सिंघ, भाई वीर सिंघ आदि प्रगतिशील सिक्खों ने खालसा बिरादरी के नाम पर जलियां वाला बाग़, श्री अमृतसर साहिब इकर्तता की और सीधे श्री दरबार साहिब व श्री अकाल तख़्त साहिब पर पहुँच कर पुजारियों से इन पवित्र स्थानों पर कब्जा कर लिया। बस, फिर क्या था, गुरुद्वारा प्रबंध सुधार के रूप में अकाली लहर की बुनियाद रख दी गई। उसी समय नवंबर-दिसंबर १९२० में श्री अकाल तख़्त साहिब के स्थान पर सर्वसम्मति के साथ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल की स्थापना हो गई। वे पंथक नेता, जिन्होंने इतना बड़ा मोर्चा सफल किया, सपरिवार पक्के सिक्ख, पाँच ककारों सहित दसतारधारी थे। यहीं से उन्होंने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर चला कर धीरे-धीरे पंजाब के सभी गुरुद्वारे महंतों से छुड़ा कर पंथक प्रबंध के अधीन कर लिए।

आदर्श सिक्ख राज्य के संस्थापक : बाबा बंदा सिंघ बहादुर

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने संवत् १७५६ की बैसाखी के दिन जब खालसा पंथ का सृजन किया, उनके पास संसार को आदर्श जीवन-व्यवस्था प्रदान करने की सुनिश्चित दृष्टि थी, जो उस अवसर पर सिक्खों को किये सम्बोधन में प्रकट हुई थी। गुरु साहिब अमृत-पान कर सजे खालसा को ऐसी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रणाली का आधार बनाना चाहते थे, जहां सभी के लिए न्याय हो, हर एक का सम्मान हो। ऐसे समाज का संकल्प गुरु साहिबान अपनी बाणी में पहले ही व्यक्त कर चुके थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उसी संकल्प को साकार करना चाहते थे। समूची जीवन-व्यवस्था का प्रतिपादन राज-शक्ति के बिना संभव नहीं है। राज-शक्ति के अभाव में धर्म- शक्ति भी प्रभावित होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा में राज्य, धर्म, अर्थ और समाज, सभी शक्तियों को समाहित किया और पूर्ण शक्ति का स्वरूप प्रदान किया। तत्कालीन परिस्थितियां ऐसी विकसित होती गईं कि खालसा की सम्पूर्ण शक्ति को प्रत्यक्ष होने का अवसर ही नहीं मिला। खालसा के सृजन के एक वर्ष में ही युद्धों का दौर आरंभ हो गया। दूसरी तरफ तख्त पर वही बैठे जो तख्त के योग्य हो। गुरु-वचन अटल था। जब समय आया तो बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने तख्त पर बैठने की खालसा की योग्यता को सिद्ध किया। यह योग्यता सिक्खों में दस गुरु साहिबान के २३९ वर्ष के गुरु-काल में विकसित एवं परिपक्व हुई थी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को इसे सिद्ध करने का अवसर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने प्रदान किया। सन् १७०४ में श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने और चार साहिबजादों सहित हजारों सिक्खों की शहीदी के बाद पंजाब से दक्षिण की ओर जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सिक्खों को संगठित करते हुए, अमृत-पान कराते हुए नांदेड़ साहिब पहुंचे तो वहां बाबा बंदा सिंघ बहादुर से मेल हुआ था और गुरु साहिब ने उन्हें सिक्ख बना कर महत्वपूर्ण मिशन पर पंजाब भेजा था।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जन्म २७ अक्तूबर, सन् १६७० को कश्मीर के पुंछ जिले के राजौरी में हुआ था। उनका प्रारंभिक नाम लक्ष्मण देव था। उनके पिता श्री रामदेव कृषक थे। युवावस्था की एक घटना ने उनका जीवन बदल दिया। एक बार उन्होंने किसी हिरनी का शिकार किया। हिरनी घायल होकर मर गई। जब उन्हें पता चला कि हिरनी तो गर्भवती है तो उनका मन विषाद से भर गया। इसके बाद किसी तरह साहस कर उन्होंने हिरनी का पेट काटा तो पेट में से दो बच्चे निकले। वे भी तड़प-तड़प कर मर गये। युवा लक्ष्मण देव इसे देख इतने व्यथित हुए कि मन वैराग्य से भर गया। उनका मन अब सांसारिक कार्यों में नहीं लगता था। एक बार एक जानकी प्रसाद नामक

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९

साधु के संपर्क में आये तो उन्हें गुरु धारण कर घर-बार छोड़ दिया। जानकी प्रसाद ने उनका नाम माधो दास रख दिया। जब वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से मिले तब भी उनका नाम माधो दास ही था। विभिन्न धर्म-स्थानों का भ्रमण करते हुए उनकी भेंट औघड़ दास से हुई जो तंत्र-मंत्र और योग के बड़े ज्ञाता थे। माधो दास उनके शिष्य बन गये और औघड़ दास को सेवा से प्रसन्न कर तंत्र-मंत्र का ज्ञान प्राप्त कर लिया। अब वे स्वयं तंत्र-मंत्र में सिद्ध हो चुके थे। भ्रमण करते हुए वे नांदेड़ साहिब पहुंच गये और वहां गोदावरी नदी के किनारे अपना मठ बना लिया। भाई रतन सिंघ (भंगू) ने 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में लिखा है कि उनके डेरे पर एक रहँट थी, जो बिना बैलों के अपने आप चला करती थी, जिसे देख लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे। इसके अतिरिक्त एक पलंग था जो जमीन से डेढ़ गज ऊँचा था। यदि कोई अन्य उस पलंग पर बैठता तो माधो दास अपनी तंत्र-मंत्र की शक्ति से पलंग को ही उलटा दिया करते थे। अपनी ऐसी शक्तियों से माधो दास की क्षेत्र में बड़ी ख्याति हो गई थी। लोग उनसे भयभीत रहते थे। डॉ. गंडा सिंघ ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि बहुत लोग माधो दास के शिष्य बन गये थे। नित्य ही श्रद्धालु आते, उन्हें माथा टेकते और भेंट आदि देते थे। तंत्र-मंत्र की शक्तियों और प्राप्त होने वाले मान-सम्मान ने माधो दास को अहंकारी और चंचल बना दिया था। जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से मेल हुआ तब माधो दास को नांदेड़ में रहते हुए सोलह वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की दक्षिण-यात्रा का एक अन्य उद्देश्य था-- मुगल बादशाह बहादुर शाह से वार्ता, गुरु साहिब यहीं रुक गये थे। उनके नांदेड़ पहुंचने के समाचार ने स्थानीय लोगों में उत्साह का संचार कर दिया। उनका दर्शन करने के लिये आने वालों का तांता लग गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को नांदेड़ पहुंचने से पूर्व ही महंत जैत राम से माधो दास के बारे में पता चल गया था। महंत जैत राम ने माधो दास से न मिलने का परामर्श दिया था। गुरु साहिब ने इस परामर्श पर ध्यान न दिया, क्योंकि उनका तो मिशन ही भटके हुओं को राह पर लाना, लोगों का जीवन संवारना था। एक दिन सुबह गुरु साहिब माधो दास के डेरे पर जा पहुंचे। भाई रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार, उनके साथ महंत का एक चेला भी था :

पहुंचयो सतिगुर जिह समें गयो बंदो कहूं और।
पलंघ सिंगारयो देखि कै गुर चढ़ बैठे दौर ।।१।।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वहां सजा हुआ पलंग देखा तो उस पर जाकर बैठ गये। माधो दास के पलंग पर गुरु साहिब के बैठ जाने से माधो दास का अहंकार आहत हुआ था। डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार, माधो दास ने अपने सिद्ध किये सभी तंत्र-मंत्र प्रयोग किये, किन्तु सभी विफल रहे। आज तक उसके सामने कोई टिक नहीं पाया था। आज वह स्वयं पराजित हुआ था। उसका सारा अहंकार जाता रहा। उसने विनम्रतापूर्वक गुरु साहिब से निम्न संवाद किया:-

माधो दास – आप कौन हैं?

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी- वो, जिसे तुम जानते हो!

माधो दास - मैं क्या जानता हूं?

गुरु साहिब - अपने मन में भली-भांति

विचार करो!

माधो दास (सोच कर) – आप गुरु गोबिंद सिंघ जी हो!

गुरु साहिब – हां!

माधो दास – आप यहां कैसे पधारे हैं?

गुरु साहिब - मैं इसलिए यहां आया हूं कि तुम्हें अपना 'सिंघ' बना सकूं!

माधो दास - मै हाजिर हूं हजूर! मैं आपका ही 'बंदा' हूं!

यह संवाद यहां उद्धृत करना इसलिये आवश्यक है ताकि गुरु की महिमा को जाना जा सके। गुरु को पल भी नहीं लगता जब वह किसी को आत्मज्ञान से भरपूर कर देता है और उसका जीवन बदल देता है। दूसरी बात यह कि मात्र एक फैसले से इतिहास की दिशा बदलते देर नहीं लगती। माधो दास के श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का 'बंदा' (शिष्य) बनते ही मुगल अत्याचारों का अंत सुनिश्चित हो गया था। गुरु साहिब ने अमृत-पान करा कर युवा माधो दास को 'सिंघ' बना दिया। कुछ लेखकों ने उसका नया नाम 'गुरबख्श सिंघ' लिखा है, किन्तु अधिक प्रयुक्त नाम 'बंदा सिंघ' ही है। उन्हें आदर से 'बाबा बंदा सिंघ बहादुर' कहा गया है।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने शीघ्र ही सिक्ख पंथ के सिद्धांतों को समझ लिया। उन्हें जब औरंगजेब के अत्याचारों, चार साहिबजादों और अन्य सिक्खों की शहीदी के बारे में विस्तार से पता चला तो मुगलों से टक्कर लेने का जोश उद्वेलित होने लगा।

गुरु साहिब ने सारी परिस्थितियों पर विचार कर उन्हें अत्याचार और अन्याय का अंत करने के लिए पंजाब भेजा। गुरु साहिब ने अपना आशीर्वाद दिया और अपने पांच तीर दिये। इसके साथ ही सहायता के लिये भाई बिनोद सिंघ, भाई काहन सिंघ, भाई बाज सिंघ, भाई दया सिंघ और भाई रण सिंघ को पांच प्यारों के रूप में साथ भेजा। यही नहीं, लगभग अन्य बीस सिक्ख योद्धा और साथ में निशान साहिब तथा नगाड़ा भी प्रदान किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को हर हाल में संयम, जत् और सत् बनाये रखने का उपदेश भी दिया। गुरु साहिब ने पंजाब के सिक्खों को बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सहायता हेतु कई हुकमनामे भी जारी किये। इस तरह बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिक्ख दल के नायक बन कर पंजाब की ओर प्रस्थान कर दिया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर जैसे-जैसे आगे बढ़ते गये उनकी सैनिक शक्ति में वृद्धि होती गई। पंजाब में जहां-जहां भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हुकमनामे पहुंचे, सिक्ख बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सहायता के लिये संगठित होने लगे। इसी मध्य पंजाब से गए पठानों ने नांदेड़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर जानलेवा हमला कर दिया। इस घटना ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर के अंदर प्रतिकार की भावना को और भी उग्र कर दिया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब पहुंच कर सरहिंद की ओर बढ़ना आरंभ किया। २६ नवंबर, सन् १७०९ को उन्होंने समाणा पर कब्जा कर लिया। इसके बाद शाहबाद, ठसका, मुस्तफाबाद आदि पर विजय प्राप्त की। इसके बाद उन्हें साढौरा पर महत्वपूर्ण विजय प्राप्त हुई। उनकी सैनिक-शक्ति निरंतर बढ़ती जा रही थी और वे एक सफल सेनानायक सिद्ध हो चुके थे। अब उनका लक्ष्य सरहिंद था जहां निर्दयी वजीर खान ने छोटे साहिबजादों-- बाबा जोरावर सिंघ जी और

बाबा फतिह सिंघ जी को दीवार में जिंदा चिनवा दिया था। छोटे साहिबजादों की यह शहीदी सभी के लिये हृदयविदारक थी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में सिक्ख सेना सरहिंद के निकट पहुंची तो चप्पड़चिड़ी के मैदान में वजीर खान से भीषण युद्ध हुआ, जिसमें उसकी करारी हार हुई। वजीर खान की मौत का रोचक प्रसंग भाई रतन सिंघ (भंगू) ने लिखा है :

चलत तीर उन घट्टा उठायो।
तुरकन की में अक्खीं पायो।
उसी घट्टे सों अंधे भए।
आपस मैं लरि कै मरि गए ।।३१ ।।
तहीं हकार खालसै दयो।
जन सिधि इजड़ शेर सु भयो।
जो तुरकन के लभे सरदार।
तेऊ खालसै दीने मार ।।३२ ।।
तहां बजीरा ससकति पया।
किला गड कोऊ अगै गया।
बंदे वहड़न साथ घिसड़ाया।
फेर अगन मैं उसे सड़ाया ।।३३ ।।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

सिक्खों ने तीर ऐसे बरसाये कि पूरा मैदान धूल से भर गया और अंधेरा छा गया। भ्रम में मुगल सैनिक एक दूसरे को ही मारने लगे। सिक्ख शेर की तरह उन पर टूट पड़े और उनके सेनापतियों को चुन-चुन कर मार दिया। वजीर खान भागने लगा तो बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने उसे घेरे में ले लिया। डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार, भाई फ़तिह सिंघ ने कृपाण के भरपूर वार से वजीर खान का सिर धड़ से अलग कर दिया था।

युद्ध में विजय के पश्चात बाबा बंदा सिंघ बहादुर सरहिंद नगर में प्रवेश कर गये और जुल्म के प्रतीक बन गये पूरे नगर को धराशायी कर दिया। यह बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण विजय थी जिसने सिक्खों को उत्साह से भर दिया। इसके पश्चात बाबा बंदा सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने जलालाबाद, जलंधर, होशियारपुर पर भी कब्जा कर लिया और लाहौर की सीमा तक जा पहुंचे। पूरे पंजाब पर उनका नियंत्रण स्थापित हो गया और शासन-प्रशासन उनके अधीन हो गया। कई स्थानों पर तो बिना किसी प्रतिरोध के उनका नियंत्रण स्थापित हुआ था। यह पहला सिक्ख राज्य था जो बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने स्थापित किया था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की विजय का यह प्रभाव भी पड़ा कि बड़ी संख्या में मुसलमान और हिन्दू अमृत-पान कर सिक्ख बन गये।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने मुखलिसगड़ के पुराने शाही किले का पुनर्निर्माण करा उसका नाम 'लौहगढ़' रखा और इसे अपनी राजधानी बना लिया। उन्होंने जो भी क्षेत्र जीते थे वहां सूबेदार नियुक्त कर उनके माध्यम से राज-व्यवस्था का संचालन किया। उनकी फौज में ऐसे सैनिक शामिल थे जो सिक्खी सिद्धांतों के प्रति पूरी तरह से समर्पित और वफादार थे। उन्होंने अपने राज्य की मुद्रा श्री गुरु नानक साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम से जारी की थी। उनकी राजसी मोहर में भी गुरु साहिबान के प्रति समर्पण दिखाई दिया। वे शक्ति, सत्ता प्राप्त करने के बाद भी स्वयं को 'गुरु का बंदा' ही समझते रहे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर का सबसे उल्लेखनीय निर्णय जमींदारी-प्रथा खत्म करना था। उनके राज्य में भूमि पर वास्तव में खेती करने वाले ही उस भूमि के स्वामी बन गये। इस प्रकार निर्धन मजदूरों को सम्मान से जीने का अधिकार और संपन्नता प्राप्त

हुई। यह एक उत्तम राज्य-व्यवस्था थी, जिसने नागरिकों को संशयविहीन कर दिया। उनके राज्य में धर्म-जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था, सभी को न्याय मिलता था। उनके कर्मचारियों में सभी धर्मों के योग्य व्यक्तियों को स्थान प्राप्त था।

समयान्तराल में परिस्थितियां बदलीं। दिल्ली के तख्त पर फारुखसियर बैठ चुका था। उसने सिक्खों के विरुद्ध पूरी ताकत झोंक दी। गुरदास नंगल की गढ़ी में बाबा बंदा सिंघ बहादुर और उनके दल को मुगलों ने घेर लिया। यह घेरा आठ महीने चला। रसद, पानी खत्म हो गया। अंतत: ७ दिसंबर, सन् १७१५ को बाबा बंदा सिंघ बहादुर सहित सभी सिक्खों को गिरफ्तार कर लिया गया। सैकड़ों सिक्खों को निर्ममता से शहीदकर दिया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को ७४० सिक्खों सहित कैद कर दिल्ली लाया गया। वहां उन्हें अपमानित करने के लिये सड़कों पर घुमाया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को लोहे के पिंजरे में रखा गया था। ४ मार्च, सन् १७१६ से सिक्खों को शहीद किए जाने का क्रम आरंभ हुआ। उन्हें पहले इसलाम धर्म में आने को कहा जाता और न मानने पर शहीद कर दिया जाता। किसी भी सिक्ख ने अपना धर्म छोड़ना स्वीकार नहीं किया। अंत में ९ जून, सन् १७१६ को प्रमुख सिक्खों के साथ बाबा बंदा सिंघ बहादुर को बाहर लाया गया। उनकी गोद में चार वर्ष के पुत्र अजै सिंघ को रख कर उसे मारने के लिये कहा गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर द्वारा इंकार करने पर अजै सिंघ को शहीद कर-दिया गया और उसका कलेजा बाबा जी के मुंह मे ठूंस दिया गया। उन्हें भयावह त्रास दिये गये। उनका एक-एक अंग काटा गया और भयानक कष्ट देकर शहीद किया गया। असह्य को सहते हुए वे अंतिम सांस तक अडोल, अविचल रहे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर और उनके साथ के सभी सिक्खों ने अदम्य साहस और दृढ़ता के साथ मुगलों के जुल्म सहे और अपने धार्मिक विश्वास की रक्षा की। वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विश्वास पर खरे उतरे थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जीवन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से मेल और कृपा के पश्चात आश्चर्यजनक रूप से बदल गया। लंबे समय तक तंत्र-मंत्र में रत रहने के बाद अमृत-पान करते ही उनके सारे भ्रम दूर हो गये थे और निराकार परमात्मा में विश्वास हो गया था। वैराग्य त्याग कर वे सिक्खी-सिद्धांतों के अनुरूप गृहस्थी बन गये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दिये उपदेश जीवन-पर्यंत उनका मार्गदर्शन करते रहे। उनकी नेतृत्व-क्षमता अद्‌भुत थी, जिसके कारण अधिकांश सिक्खों का समर्थन और सहयोग उन्हें प्राप्त होता रहा। यह प्रथम अवसर था जब उन्होंने सिद्ध किया कि सिक्ख जितने कुशल योद्धा हैं उतने ही क्षमतावान शासक भी हैं। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के राज्य ने प्रचारित किये गये वे सारे भ्रम तोड़े जो सिक्खों को मात्र एक मार्शल कौम के रूप में पेश करते थे और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा प्रतिपादित मीरी- पीरी के सिद्धान्त की उत्कृष्टता को समझने में असमर्थ थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने राज्य और धर्म दोनों को समान महत्व दिया। डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार, उन्होंने बहुत सारे लोगों को अमृत-पान करा कर सिंघ सजाया था। उनका जीवन सिक्खों और सिक्खी के लिये प्रेरणास्रोत है।

चौधरी भाई लंगाह

-बीबी गुरमीत कौर*

ज़िला तरनतारन का गाँव झबाल बहुत ही ऐतिहासिक महत्ता रखता है। चौधरी भाई लंगाह, माई भागो जी, सरदार बघेल सिंघ आदि महान शख़्सियतों ने गाँव झबाल में जन्म लिया। इस इलाके के लोग बहुत ही साहसी, बलवान और जंगजू माने जाते थे। जब श्री गुरु नानक देव जी ने पंजाब में धर्म-प्रचार आरंभ किया तो उस समय माझा क्षेत्र के हज़ारों लोगों ने गुरु साहिब पर श्रद्धा-भावना रखी और गुरु साहिब के सिक्ख कहलवाना आरंभ कर दिया। श्री गुरु रामदास जी ने जब श्री अमृतसर साहिब नगर बसाना आरंभ किया, सरोवर की खुदाई आरंभ की तो माझा क्षेत्र के लोगों ने गुरु-घर आकर बहुत सेवा की। श्री गुरु अरजन देव जी के समय भी यहाँ के लोग बहुत सेवा करते रहे। श्री गुरु अरजन देव जी के समय में ही इनी गांव झबाल में से सेवा-भावना रखने वाला एक सिक्ख हुआ-- चौधरी भाई लंगाह। चौधरी भाई लंगाह का जन्म अब-उल-ख़ैर के घर गाँव झबाल में हुआ। अब-उल-ख़ैर ढिल्लों गोत्र के जाट थे और मुलतानी मत के साथ सम्बन्ध रखने वाले सखी सरवर थे। अब-उल-ख़ैर के पाँच पुत्र थे-- जुसतरिया, बिन्ना, सुंदर, पैरो शाह और चौधरी भाई लंगाह। उस समय पट्टी को नौ लक्खी पट्टी कहा जाता था, क्योंकि इसका मालिया नौ लाख रुपए होता था। यह नौ लाख मालिया तीनों गाँवों के चौधरी, नौशहरा ढाला के संधू, नौशहरा पन्नूआ के पन्नू और झबाल के ढिल्लों अदा किया करते थे। इन तीनों चौधरियों द्वारा तीन-तीन लाख रुपए मालिया भुगतान किया जाता था। झबाल गाँव का तीन लाख रुपए का मालिया चौधरी भाई लंगाह द्वारा भुगतान किया जाता था। उस समय इन चौधरियों को गाँव का मालिक माना जाता था। चौधरी अपनी मर्ज़ी से किसी को भी गाँव में से बाहर निकाल सकता था या किसी भी अपराध के बदले दंड दे सकता था। इन चौधरियों का वास्ता ज़्यादातर मुसलमानों संग पड़ता था। चौधरी भाई लंगाह अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ नामक मुग़ल शासकों का समकालीन था। चौधरी भाई लंगाह संबंधी वर्णन वारां भाई

*रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ८१९५८-१०१०६

गुरदास जी में इस प्रकार मिलता है :

पटी अंदरि चउधरी ढिलो लालु लंगाहु सुहंदा।

(वार ११: २२)

जब अकबर का विवाह मैहर मिट्ठा की पुत्री के साथ हुआ तो उसने पंजाब के प्रमुख चौधरियों को कांगड़ा में बुला कर उत्सव आयोजित किया था, जिसमें चौधरी भाई लंगाह के शामिल होने का भी वर्णन मिलता है। चौधरी भाई लंगाह के पास अपने पूर्वजों द्वारा क्रय किए गए ८४ गाँव मौजूद थे। जब श्री गुरु अरजन देव जी तरनतारन का सरोवर तैयार करवा रहे थे तो उस समय चौधरी भाई लंगाह का स्वास्थ्य ख़राब चल रहा था। चौधरी पर किसी भी किस्म की दवा असर नहीं कर रही थी। किसी भले सिक्ख ने इन्हें सिक्खी का मार्ग बताया। उस समय ये श्री गुरु अरजन देव जी के दर्शन करने के लिए तरनतारन पहुँचे। चौधरी भाई लंगाह गुरु जी के विचारों से बहुत प्रभावित हुए और स्वस्थ होकर गुरु जी के सिक्ख बन गए। महाकवि भाई संतोख सिंघ के अनुसार :

पटी के दुइ चौधरी ढिल्लों लाल लंगाह।
करी आनि करि बंदना श्री गुरु अरजन पाह ।।

(रास द्वितीय, अंसू ५५)

तरनतारन के इर्द-गिर्द का इलाका चौधरी भाई लंगाह का था। श्री गुरु अरजन देव जी दिन भर तरनतारन में सरोवर की सेवा करवाते और शाम को गाँव में जा निवास करते। चौधरी भाई लंगाह ने ठट्टी और खारा गाँव बसाए थे। तरनतारन से झबाल गाँव लगभग १४ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पंचम पातशाह के सिक्ख बनने के पश्चात् चौधरी भाई लंगाह रोज़ाना सुबह गुरु जी के स्नान के लिए दही की मटकी सिर पर रख कर नंगे पाँव गुरु जी के दरबार में उपस्थित होते थे। सतिगुरु जी के दर्शन कर दही भेंट करने के पश्चात् ही चौधरी भाई लंगाह अन्न-जल छकते थे और शाम को गाँव झबाल वापस लौट आते थे। लम्बा समय वे यूँ ही करते रहे। एक बार गुरु जी ने अपने सिक्ख की परीक्षा लेनी चाही। एक दिन चौधरी भाई लंगाह जब गुरु जी के दर्शन कर झबाल वापस चले गए तो श्री गुरु अरजन देव जी तरनतारन से श्री अमृतसर साहिब चले आए। जब चौधरी भाई लंगाह अगले दिन गुरु जी के दर्शन को तरनतारन आए तो उन्हें पता चला कि गुरु जी तो श्री अमृतसर साहिब चले गए हैं। चौधरी भाई लंगाह उसी हालत में नंगे पाँव सिर पर दही की मटकी उठाए श्री अमृतसर साहिब की तरफ चल पड़े। जब वे श्री अमृतसर साहिब पहुँचे तो उन्हें पता चला कि गुरु जी तो अब तरनतारन चले गए हैं। चौधरी भाई लंगाह पुन: वापस तरनतारन की

तरफ चल पड़े। जब गुरु-दरबार में उपस्थित हुए तो दही की मटकी भेंट की। गुरु जी के दर्शन करने के पश्चात् ही चौधरी भाई लंगाह ने अन्न-जल ग्रहण किया। गुरु जी अति प्रसन्न हुए, क्योंकि इतनी बड़ी आस्था और भरोसा कोई छोटी बात नहीं थी। गुरु जी ने चौधरी भाई लंगाह को गले से लगाया और कहा-- ''भाई लंगाह! तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हो। तुमने (जीवन की) सफलता हासिल कर ली है। अब तुम्हें रोज़ाना लंबा मार्ग तय कर आने की जरूरत नहीं। जब भी फुर्सत मिले आ जाया करो!''

इन्होंने गुरु-घर के पशुओं के लिए अपनी ज़मीन का एक हिस्सा दान में दे दिया। झबाल गाँव उस शाही मार्ग पर बसता था जो दिल्ली से लाहौर जाता था। इस मार्ग के इर्द-गिर्द का सारा इलाका चौधरी भाई लंगाह का था, जिसका कुछ हिस्सा आबाद था और कुछ हिस्सा अभी तक बीहड़ ही था।

अकबर के बाद जहाँगीर का समय आया। खुसरो अपने पिता जहाँगीर के विरुद्ध बागी होकर पंजाब की तरफ आ गया। शाही फौज के सामने खुसरो हार गया। उस समय जो भी उसका समर्थक था उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया। जिसकी तरफ भी शक की निगाह जाती, उसे पकड़ कर सज़ा दे दी जाती थी। चन्दू की कूटनीतियों के कारण गुरु जी पर भी इलज़ाम लगाए गए कि वे खुसरो के समर्थक हैं। गुरु जी को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया गया। उस समय जो पाँच सिक्ख गुरु जी के साथ लाहौर गए थे, चौधरी भाई लंगाह उनमें से एक थे। 'तवारीख गुरू ख़ालसा' के अनुसार, ''गुरु जी भाई जेठा भाई पैड़ा, भाई बिधिया, भाई लंगाह, भाई पिराणा आदि सिक्खों को साथ लेकर लाहौर जा पहुँचे।'' (पृष्ठ ४३५, भाग प्रथम) इसका वर्णन मैक्स आर्थर मैकालिफ की लिखित में भी मिलता है-- ''गुरु अरजन देव जी लाहौर जहाँगीर बादशाह के पास गए। गुरु जी अपने साथ भाई बिधी चंद, भाई लंगाह, भाई पैड़ा, भाई जेठा और भाई पिराणा को लेकर गए।'' चौधरी भाई लंगाह का गुरु जी के साथ जाना उनकी जायदाद, जान, चौधरायत सब कुछ को खतरे में डालने के समान था। इसके बावजूद चौधरी भाई लंगाह गुरु जी के साथ गए।

चौधरी भाई लंगाह श्री गुरु अरजन देव जी के बाद श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के भी निष्ठावान सिक्ख रहे। चौधरी भाई लंगाह तेग़ के धनी थे, जिस कारण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने चौधरी भाई लंगाह को नवगठित सेना का कमांडर नियुक्त किया। जहाँगीर का समय बीत गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् पूरे

देश में हड़कंप मच गया। पंजाब के हाकिम श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ कई कारणों से द्वेष रखते थे, जिस कारण शाही फौज ने श्री अमृतसर साहिब पर आक्रमण कर दिया। शाही फ़ौज पराजित हुई। जब शाही फ़ौज ने आक्रमण किया, उस समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पुत्री बीबी वीरो का विवाह-कार्य चल रहा था। सभी तैयारियाँ मुकम्मल हो चुकी थीं। युद्ध का तीसरा दिन था। शाम को बारात ने श्री अमृतसर साहिब पहुँचना था। गुरु जी ने हुक्म दिया कि शेष परिवार चौधरी भाई लंगाह के गाँव झबाल पहुंचा जाए। वर पक्ष की तरफ भी एक संदेशवाहक भेजा गया कि बारात श्री अमृतसर साहिब की जगह झबाल गांव ले जाई जाये। गुरु जी दिन भर शाही सेना के विरुद्ध लड़ते रहे और युद्ध जीत कर शाम होते ही झबाल गांव पहुँच गए। अमृत बेला (प्रभात समय) में चौधरी भाई लंगाह के घर पर बीबी वीरो का अनंद कारज संपन्न हुआ। सूर्योदय होते ही बारात विदा कर गुरु जी शेष परिवार सहित डरोली गांव चले गए। गांव झबाल में वर्तमान समय में गुरुद्वारा बीबी वीरो जी सुशोभित है।

मौखिक स्रोतों से मिली जानकारी के अनुसार चौधरी भाई लंगाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की करतारपुर वाली जंग में भी शामिल रहे। इस जंग में चौधरी भाई लंगाह घायल होने के कारण मानसिक संतुलन गँवा बैठे थे। इनका देहांत ढिल्लवां गाँव की सीमा में हुआ। ढिल्लवां गाँव निवासियों ने लाश उठा कर गाँव बुड्ढा थेह, जो कि दरिया ब्यास के किनारे स्थित है, की सीमा में रख दी। दोनों गाँवों के लोगों द्वारा विचार-विमर्श के बाद भाई लंगाह का दाह संस्कार दरिया के किनारे किया गया। जब चौधरी भाई लंगाह का दाह संस्कार हो रहा था तो गाँव ढिल्लवां के निवासी वहां से रफूचक्कर हो गए, जबकि गाँव बुड्ढा देह के निवासी वहा पर उपस्थित रहे। गाँव में चौधरी भाई लंगाह की यादगार निर्मित की गई। अब यहां अति सुंदर गुरुद्वारा साहिब सुस्थित है। रिवायत के अनुसार इस गुरुद्वारा साहिब में प्राचीन काल में वर्षा न होने के कारण प्रत्येक वर्ष १० आषाढ़ वाले दिन लंगर लगाया जाता था। बाद में इसी दिन गाँव के लोग १० आषाढ़ को चौधरी भाई लंगाह का शहीदी दिवस मनाने लगे, जो अब भी मनाया जाता है। इस दिन गाँव झबाल और आस-पास की संगत गुरुद्वारा साहिब पहुँचती है। गाँव झबाल में भी चौधरी भाई लंगाह के नाम पर गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन की ऐतिहासिक खोज के अनुसार-- ''चौधरी भाई लंगाह के दो पुत्र सिकंदर व जमस्त और

एक पुत्री उमरी नामे थी। बीबी उमरी को विवाहोपरांत झबाल गांव के निकट एक चक्क बाँध दिया (गाँव बसा दिया), जो आजकल लालू घुंमण के नाम से एक बड़ा गाँव है। जमस्त के नाम पर जमस्तपुरा आबाद किया था। इसकी औलाद जमस्त पुरा, नट्टी खारा और चुभाल (झबाल) में भी निवास करती थी। सिकंदर चौधरी था तो महान प्रतापी। अन्य गाँव खरीद कर कुल संख्या १०५ गाँव कर ली। सिकंदर का एक ही पुत्र थी– मुबारक, जो औरंगजेब का समकालीन था।''

स्त्रोतों में दर्ज जानकारी के अनुसार, जब औरंगजेब के कब्जे से भाग कर द्वारा शिकोह लाहौर आया तो उसने श्री गुरु हरिराय साहिब को अपनी मदद के लिए बुलाया। उस समय श्री गुरु हरिराय साहिब अपने बाईस सौ सवारों सहित उसकी सहायता के लिए आए। चौधरी मुबारक भी अपने सवारों सहित गुरु जी के संग था।

चौधरी मुबारक के बाद सिक्ख इतिहास में माई भागो का नाम आता है। माई भागो चौधरी भाई लंगाह के सहोदर भाई पैरो शाह की पोती थी। माई भागो निडर स्त्री थी, जिसने ऐसे कारनामे किये जो सिक्ख इतिहास का शृंगार हैं। माई भागो का श्री मुकतसर साहिब के युद्ध में विशेष योगदान था। सरदार बघेल सिंघ का सम्बन्ध भी झबाल गाँव के साथ था। कुछ लेखकों का कहना है कि झबाल उसका ननिहाल गाँव था। सरदार बघेल सिंघ को 'झबालिया' भी कहा जाता है। सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन के अनुसार, ''पंजाब के सभी चौधरियों में से चुभालिए (झबालिए) चौधरी ही ऐसे हैं जो सिंघ सज कर ख़ालसा दल के संग मिले और मुग़ल सरकार के विरुद्ध डटे रहे।''

सिक्ख इतिहासकार सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन, जिसने सिक्ख इतिहास के संबंध में वैज्ञानिक पहुँच अपनाने की पहल की थी, गाँव झबाल में पैदा हुआ। सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन चौधरी भाई लंगाह के पुत्र चौधरी सिकंदर के परिवार में से था। वो पहला इतिहासकार है जिसने ऐतिहासिक कार्य को ऐतिहासिक लगन के साथ आरंभ कर इतिहास लिखने की बुनियाद वैज्ञानिक ढंग के साथ रखी।

पंचम पातशाह के अनन्य सिक्ख

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

गुरुआई पर सुशोभित होने के पश्चात पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने सिक्ख धर्म के संगठनात्मक रूप को शक्तिशाली बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किये। गुरु जी ने अमृत सरोवर में श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना करके सिक्खों को केंद्रीय आध्यात्मिक स्थान तो दिया ही, साथ ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन कर दुनिया को ऐसा मार्गदर्शक दे दिया जो रहती दुनिया तक सब तरफ रोशनी फैला सकता है। गुरु जी की प्रबंधन-क्षमता इतनी अधिक विलक्षण थी कि उनके नेतृत्व में सिक्ख धर्म एक बहुत ही बड़ी संख्या वाला, आर्थिक रूप से बेहद समृद्ध और प्रभावशाली संगठन बन गया।

पंचम पातशाह ने 'संगत' और 'बाणी' के माध्यम से सिक्खी के इस महल को और भी मजबूत किया।

इन महान उपक्रमों की बदौलत सिक्ख धर्म पूरे भारत में फैल गया। जगह-जगह पर सिक्खी आदर्शों पर चलने वाले प्रतिष्ठित सिक्ख बैठे हुए थे। माझा क्षेत्र में चौधरी लंगाह, भाई लद्धा परोपकारी, गुजरात जिले में भाई बन्नो और भाई भिखारी, दोआबा क्षेत्र में भाई मंझ, भाई छज्जू भला, मालवा में भाई बहिलो, भाई बोहड़ू, भाई सींह चंद, भाई रूप चंद, भाई चूहड़ चऊंझड़ लखनऊ, भाई भाना प्रयाग, भाई निवल निहाला पटना साहिब, भाई तीरथ और भाई हरिदास ग्वालियर, भाई सम्मन शाहबाजपुर, भाई भाना और भाई धीर उज्जैन, भाई जटू जौनपुर, भगत भगवान दास बुरहानपुर, भाई मोहन ढाका, भाई अनंद मुरारी आगरा, भाई जीवंदा और भाई जागसी फ़तेहपुर, भाई माधो धोड़ी कश्मीर, भाई तिलोका, भाई भाना मल्ल काबुल आदि अलग-अलग जगह पर प्रचार कर सिक्ख धर्म का प्रसार कर रहे थे।

इस संबंध में भाई गुरदास जी ने लिखा है :

चारे चक निवाइओनु
सिख संगति आवै अगणता।
लंगरु चलै गुर सबदि
पूरे पूरी बणी बणता। *(वार २४:२०)*

पंचम पातशाह के अनेक अनन्य सिक्खों में से कुछ सिक्खों का वर्णन निम्नवत है :-

भाई मंझ : मंझ पिआरा गुरू को : भाई मंझ श्री गुरु अरजन देव जी के समर्पित सिक्ख थे। भाई जी गांव कंगमाई, जिला होशियारपुर के

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना— १४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१*

रहने वाले थे। इनका मूल नाम 'तीरथ' था और ये 'मंझ' समुदाय से संबंध रखते थे, इसीलिए सिक्ख जगत में ये 'मंझ' नाम से लोकप्रिय हो गये। पहले ये मुसलमान फकीर सखी सरवर के मुरीद थे। एक बार ये श्री गुरु अरजन देव जी के पास गये और बाणी का पाठ सुना। गुरबाणी सुनकर इनके विचार ही बदल गये। इनके आध्यात्मिक चिंतन का कायाकल्प हो गया। गुरु जी के साथ ऐसा प्यार पनपा कि गुरु जी से सिक्खी का प्रसाद माँगा। गुरु जी ने इन्हें समझाया कि सिक्ख बनने से अन्य सभी आस्थाओं का परित्याग करना होगा। भाई मंझ ने सिक्ख बनने की ठान ली थी। इन्होंने गांव आकर सखी सरवर की पूजा बंद कर दी और उस समुदाय से नाता तोड़ लिया।

भाई मंझ ने इतनी लगन और प्रेम से सेवा की कि इन्हें एक आदर्श सेवक माना जाने लगा। सिक्ख इतिहास के अनुसार, एक बार ये गुरु के लंगर के लिए लकड़ी चुन कर ला रहे थे, तभी तूफान के कारण रास्ता भटक गए और एक कुएं में गिर गए। संयोगवश कुएं में पानी कम था। भाई मंझ ख़ुद खड़े रहे और लकड़ियों का गट्ठर अपने सिर के ऊपर रखे रखा, ताकि पानी में डूबकर भीग न जाए। ये पूरी रात पानी में खड़े रहे व बाणी का पाठ करते रहे। सुबह एक सिक्ख ने कुएं से बाणी पढ़ने की आवाज सुनी। उसने अंदर पुकारा तो देखा कि भाई मंझ खड़े हैं। सिर पर लकड़ियों का गट्ठर है। पिछली शाम से ही सिक्ख संगत भाई मंझ को ढूंढ रही थी। सूचना मिलने पर गुरु जी स्वयं आये और रस्सियाँ बाँधकर भाई मंझ को बाहर निकालने का प्रयास शुरू किया। भाई मंझ ने पहले रस्सियों से लकड़ियों का गट्ठर बांधकर बाहर भेजा और फिर स्वयं बाहर आये। भाई मंझ का मानना था :

यहि तन भीगयो बिगरत नाहीं।
लकरी भीगी जर हो नाहीं।।

भाई मंझ के समर्पण और सेवा-भावना को देखकर गुरु जी ने फरमाया :

मंझ पिआरा गुरू को, गुरू मंझ पिआरा।
मंझ गुरू का बोहिथा, जग लंघणहारा।।

गुरु जी ने भाई मंझ को अपने क्षेत्र दोआबा में सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी सौंपी।

सिक्ख इतिहास में दर्ज है कि दोआबा क्षेत्र की यात्रा के दौरान श्री गुरु अरजन देव जी कंगमाई गए और भाई मंझ के प्रचार-कार्य व लंगर-व्यवस्था की प्रशंसा की। इन्हें दोआबा में सिक्ख धर्म का स्तंभ कहा। भाई मंझ के नाम पर शोभित गुरुद्वारा साहिब में लाखों लोग बड़ी श्रद्धा से आते हैं। प्रत्येक संक्रांति को यहां एक विशेष संगत का आयोजन होता है और प्रत्येक वर्ष माघी के दिन एक बड़ा मेला लगता है।

भाई बहिलो (१५५३-१६०३ ई.) : भाई बहिलो का जन्म १५५३ ई. में बठिंडा जिले के

फफड़े नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम अल्दित चौधरी या औलादित्ता था और माता का नाम गाग था। ये भी सुलतान सखी सरवर के उपासक थे और सुलतानिया कहलाते थे। इनका असली नाम 'बहलोल' था। प्रत्येक वर्ष कई सुलतानियों को साथ लेकर नागाहे (डेरा गाजी खान) की तीर्थ-यात्रा पर जाया करते थे।

एक बार ये श्री अमृतसर साहिब से होकर गुज़र रहे थे तो मन किया कि श्री गुरु अरजन देव जी के दर्शन किये जायें। यह सोचकर ये श्री दरबार साहिब आ गये। आकर देखा कि गुरु जी सरोवर की सेवा करवा रहे हैं। इन्होंने जैसे ही गुरु जी के दर्शन किये, अपने आप को गुरु-चरणों में समर्पित कर दिया। इन्होंने अपनी टोली को वापस भेज दिया और यहां सरोवर में सेवा का काम शुरू कर दिया। बाद में ये ईंट भट्ठे पर काम करने लगे। ईंटों की मजबूती के लिए गोबर और विष्ठा आदि को इकट्ठा कर गारे में डालना शुरू कर दिया। काम करते समय इनका ध्यान निरंतर गुरु-चरणों में लगा रहता। एक दिन गुरु जी आवे पर आए और भाई बहिलो की अविश्वसनीय सेवा से बहुत प्रभावित हुए। गुरु जी ने तुरंत भाई बहिलो को गांव लौटने के लिए कहा और उन्हें मालवा क्षेत्र की संगत के बीच गुरसिक्खी को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी सौंपी।

इनके वंशजों को 'भाई-के' कहा जाता था और इसलिए इनके गांव का नाम भी 'फफड़े भाईके' या 'भाईके फफड़े' के रूप में लोकप्रिय हो गया। इनके वंश में भाई भगता हुए हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इनके वंशजों को आशीर्वाद दिया। कहा जाता है कि भाई बहिलो कविता भी लिखते थे। इनके वंशजों में से एक भाई पंजाब सिंघ ने १८५० ई. में अपनी कविताओं का एक संग्रह भी तैयार किया था। २५ मार्च, १६०३ ई. को भाई बहिलो का शरीरांत हो गया। इनकी याद में 'फफड़े भाईके' गांव में 'गुरुद्वारा भाई बहिलो जी' बनाया गया है। इसकी व्यवस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी व स्थानीय कमेटी द्वारा की जाती है :

भाई बन्नो (१५५८-१६४५ ई.) : भाई बन्नो श्री गुरु अरजन देव जी के समर्पित सिक्ख हुए हैं। इनका जन्म मांगट गांव में १५५८ ई. में हुआ था। इस गांव का पुराना नाम खारा था। इनके पिता का नाम बिशन देव और माता का नाम भागो था। भाई बन्नो बचपन से ही धार्मिक रुचियों वाले थे। बड़े होकर भाई बन्नो ने श्री गुरु अरजन देव जी से सिक्खी प्राप्त की। भाई जी ने श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के निर्माण और अमृत सरोवर की खुदाई में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भाई जी इतने नि:स्वार्थ भाव से सेवा किया करते थे कि किसी को पता ही नहीं चलता था। अमृत-बेला में ये सिर-मुँह लपेटकर कुएं पर

जाते और कुएं से पानी खींच कर सभी को स्नान कराते। गुरु जी उन्हें 'प्यारा सिक्ख' कहा करते। श्री गुरु अरजन देव जी ने इनके सम्मान में कहा था :

हमरा प्रोहित भाई बंनो।
साध-संगति तुम सत्कार मंनो।

भाई बन्नो ने बहुत निष्ठापूर्वक अपने क्षेत्र में सिक्ख धर्म का प्रचार किया। उनकी पत्नी माई राजी (या माई सुरंगी) और उनके पुत्रों ने भी उनके साथ मिलकर सिक्ख धर्म का प्रचार किया। जनवरी १६४५ ई. में भाई बन्नो का निधन हो गया।

भाई भिखारी : भाई भिखारी भी पंचम पातशाह के अनन्य सिक्ख रहे हैं। ये पंजाब के गुजरात नगर के रहने वाले थे। सिक्ख इतिहास के अनुसार, ये अपने समय के बहुत अच्छे व्यवहार वाले और नाम की अच्छी कमाई करने वाले सिक्ख थे।

श्री गुरु अरजन देव जी के ज्योति-जोत समाने के बाद जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब गुरुआई पर बिराजे तो एक सिक्ख ने प्रार्थना की कि आप मुझे अपने एक आदर्श सिक्ख के दर्शन कराइए! गुरु जी ने उसे भाई भिखारी के पास भेज दिया। जब वे गुजरात में भाई जी के घर पहुंचे तो भाई भिखारी के पुत्र की शादी की तैयारियां चल रही थीं।

लेकिन भाई भिखारी एक तरफ सहज अवस्था में बैठे एक चटाई बुन रहे थे। पास में लकड़ी का एक गट्ठर बंधा रखा था। उस सिक्ख ने वहाँ अर्थी, कफन और अंतिम संस्कार का अन्य सामान भी देखा। उसने आश्चर्यचकित होकर भाई जी से पूछा तो उन्होंने कहा कि इसका उत्तर भी मिल जाएगा।

विवाह संपन्न हुआ और भाई भिखारी ने दान-पुण्य करके यह खुशी की रस्म पूरी की।

रात में दूल्हे के पेट में शूल उठा और उसकी मृत्यु हो गयी। उस दुख के समय में भी भाई भिखारी बहुत शांत-स्थिर रहे, जैसे वे खुशी के अवसर में रहे थे।

दूसरे दिन कमरे में पड़ी अर्थी और कफ़न से पुत्र का दाह-संस्कार किया और दुख प्रकट करने आये लोगों को उस चटाई पर बैठाया।

भाई जी ने सभी को 'भाणा' (प्रभु-हुक्म) मानने के लिए कहा।

गुरु जी के कहने पर वहां आया सिक्ख यह सब देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने भाई भिखारी को प्रणाम किया और इन सबका विवरण लौटकर गुरु जी को आ सुनाया। सारी संगत ने भाई भिखारी के वृत्तांत को सुनकर उनकी सिक्खी को धन्य-धन्य कहा। इस प्रकार सेवा और सिमरन के पुंज-- गुरसिक्ख अपनी मिसाल आप हैं।

महाराजा रणजीत सिंह की धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक नीतियाँ

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

महाराजा रणजीत सिंघ को यूं ही शेरे-पंजाब नहीं कहा जाता, सचमुच वे पंजाब के शेर थे . . . बब्बर शेर। इतिहास में ऐसे सम्राट बहुत कम हुए हैं, जिन्हें सभी समुदायों एवं धर्मों के लोग पसंद करते हों, उनका हृदय से सम्मान करते हों। महाराजा रणजीत सिंघ ऐसे ही उच्च कोटि के सम्राट हुए हैं, जिन्हें सभी लोग मोहब्बत करते थे, उनका अति आदर-सम्मान करते थे। कहा जाता है कि उन्होंने भूमि के एक विशाल हिस्से पर शासन ही नहीं किया, अपितु विशाल जनसमूह के हृदय पर भी शासन किया। शेरे-पंजाब के अलावा उन्हें 'हृदय-सम्राट' कहना उनकी महान व बेदाग शख्सियत को दर्शाता है। आजकल के कई शासक, लोगों की नफरत के पात्र बने हुए हैं। वे विभिन्न समुदायों में वैमनस्य पैदा कर अपनी राजनीति चमकाने में लगे हुए हैं। उन्हें महाराजा रणजीत सिंघ के जीवन व व्यक्तित्व से सीख एवं प्रेरणा लेनी चाहिए।

भारत की आधुनिक व शक्तिशाली तथा प्रथम संगठित सेना- 'सिक्ख खालसा सेना' के संस्थापक, न्यायप्रिय सम्राट, महान् व लासानी योद्धा, निपुण राज्य-प्रबंधक, उच्च कोटि के सेनापति, दयावान शासक, शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ का जन्म शुकरचक्किया मिसल के अगुआ सरदार चढ़त सिंघ के सुपुत्र सरदार महां सिंघ व माता राज कौर के गृह में गुजरांवाला (पाकिस्तान) में १३ नवंबर, सन् १७८० ई. को हुआ था। सरदार महां सिंघ के अकस्मात निधन के बाद महाराजा १० वर्ष की अल्प आयु में शुकरचक्किया मिसल के प्रमुख बन गए थे।

महाराजा रणजीत सिंघ की महानता का वर्णन प्रसिद्ध विद्वान एवं सैलानी वैरन दि हिऊगल ने अपने यात्रा संस्मरण 'ट्रैवल इन कश्मीर एंड पंजाब' में इस प्रकार किया है-- "जो सलतनत महाराजा रणजीत सिंघ ने एक निपुण कारीगर की भांति अनेक बिखरे टुकड़ों को जोड़कर स्थापित की, वह ला-मिसाल है। वह मुझे वर्तमान संसार का सबसे अद्वितीय व्यक्तित्त्व प्रतीत हुआ है।"

ब्रिटिश इतिहासकार जे. टी. व्हीलर के कथनानुसार, "अगर वे एक पीढ़ी पुराने होते तो पूरे हिन्दुस्तान पर ही विजय प्राप्त कर लेते। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज्य में शिक्षा और कला को अति प्रोत्साहन दिया। उन्होंने अपने जीते-जी अंग्रेज़ों को अपने साम्राज्य के

**बी-एक्स-१२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

निकट फटकने तक न दिया।''

प्रसिद्ध पंजाबी कवि शाह मुहम्मद महाराजा की प्रशंसा करते हुए लिखता है :

महाबली रणजीत सिंघ होइआ पैदा,
नाल ज़ोर दे मुलक हिलाए गिआ।
मुलतान, कशमीर, पिशौर, चंबा,
जम्मू, कांगड़ा, कोट निवाए गिआ।
होर देश लद्दाख ते चीन तोड़ी,
सिक्का नाम दा आपणे चलाए गिआ।
शाह मुहम्मदा जाण पचास बरसां,
अच्छा रज्ज के राज कमाए गिआ।

महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्ख राज्य स्थापित कर पूरे विश्व में पंजाबियों का गौरव एवं सम्मान बढ़ाया। वे अति लोकप्रिय, प्रजापालक सम्राट हुए हैं। उनके शासन-काल में कभी किसी को फांसी नहीं दी गई। उन्होंने न केवल पंजाब की, बल्कि भारत की सभ्यता व संस्कृति का सम्मान बढ़ाया। उन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों एवं लुटेरों से भारत को सुरक्षित रखने हेतु पश्चिमी सीमा पर दर्रा खैबर नामक स्थान पर जमरौद के किले का निर्माण करवाया। उनमें श्रेष्ठता व महानता जैसे गुण मौजूद थे। वे चुस्त, निडर, बहादुर, दूरदृष्टि वाले, दृढ़ निश्चयी, स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी और उच्च कोटि के कूटनीतिज्ञ थे। विश्व-प्रसिद्ध शासक बनना उनकी सूझबूझ व उत्तम कार्यशैली का प्रमाण है। सिक्ख मिसलों को इकट्ठा कर उन्होंने मज़बूत और शक्तिशाली सिक्ख साम्राज्य स्थापित किया तथा उन फिरंगियों को हार मानने पर विवश किया, जिनके बारे में कहा जाता है कि उनके राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता था।

महाराजा का व्यक्तित्व अति प्रभावशाली था। वे प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करने की क्षमता रखते थे। बचपन में चेचक का शिकार होने के कारण उनके चेहरे पर दाग थे। बाईं आँख ज्योतिविहीन थी, किंतु उनके चेहरे पर जो तेज था, वह देखते ही बनता था। कोहिनूर हीरा उनकी सत्ता की शोभा को चार चाँद लगाता था। महाराजा रणजीत सिंघ का नाम भी तो विश्व के इतिहास में कोहिनूर हीरे की भांति चमकता-दमकता है। प्रसिद्ध इतिहासकार ग्रीफन महाराजा के बारे में इस प्रकार उल्लेख करता है-- ''कोई भी पंजाब की यात्रा करने आने वाला सैलानी महाराजा रणजीत सिंघ के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। गुलाब के फूलों जैसी मुस्कान उनके होठों पर सदा खिली रहती थी।''

महाराजा धर्मी राजा थे। सुबह श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से 'वाक' सुने बिना वे नाशता नहीं किया करते थे। गुरबाणी में उनकी असीम श्रद्धा थी। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हस्तलिखित स्वरूप तैयार करवाए। श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर साहिब की पवित्र व ऐतिहासिक इमारत पर सोने के पत्र चढ़वाने का पुनीत कार्य करवाया। सिक्ख धर्म में अगाध श्रद्धा होने के

बावजूद वे धर्म-निरपेक्ष थे। उनकी वज़ारत में सभी धर्मों के लोग शामिल थे। उनकी धार्मिक निरपेक्षता एवं सहिष्णुता ने उन्हें सर्वप्रिय, लोकप्रिय शासक बना दिया था। मौजूदा भारत के कई शासकों की तरह वे कट्टरपंथी नहीं थे। अल्पसंख्यकों को तंग-परेशान नहीं किया करते थे। उनका राज्य वास्तव में धर्म-निरपेक्ष था। उन्होंने हिंदुओं और सिक्खों से वसूले जाने वाले जज़िया पर पूर्णत: रोक लगाई। कभी किसी को धर्म-परिवर्तन के लिए विवश नहीं किया गया। वे न्याय, सच और ईमान के पहरेदार थे।

लाहौर पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने सुनहरी मसजिद मुसलमानों को सौंप दी। मुलतान पर अपनी जीत के बाद पीर बहाबल हक के मकबरे की प्रथा पहले की तरह कायम रखी तथा अन्य कई मकबरों की मरम्मत हेतु सरकारी खज़ाने में से राशि जारी की। पेशावर पर विजय प्राप्त करने के बाद अपने सेनापति सरदार हरी सिंघ नलवा को हिदायत की कि हज़रत उमर के पुस्तकालय को कोई क्षति न पहुंचाई जाए। प्रत्येक धर्म के लोग अपनी फरियादें लेकर उनके दरबार में आते थे। उन्हें निराश नहीं होना पड़ता था। उनकी फरियादें सुनी जाती थीं और उनकी समस्याएं हल की जाती थीं। आजकल के कई शासक व प्रशासक लोगों की समस्याएं सुनने का केवल नाटक (दिखावा) करते हैं। उन्हें दूर करने की कतई कोशिश नहीं करते। ये ढोंगी, स्वार्थी और बहुरूपिया हैं। इनकी कार्यशैली हमेशा शक के घेरे में रहती है। वर्तमान में भी भारत के लोग महाराजा रणजीत सिंघ के शासन जैसी बढ़िया एवं शानदार शासन-व्यवस्था की कामना व इच्छा रखते हैं। अच्छाई व सच्चाई सदियों लंबा सफर तय करने की क्षमता रखती है। झूठ के तो पांव ही नहीं होते।

महादानी महाराजा रणजीत सिंघ सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण रखते थे। उन्होंने हिंदुओं के मंदिरों का भी पूरा आदर-मान किया। बनारस के ऐतिहासिक मंदिर पर स्वर्णजड़ित पत्र चढ़वाने के लिए लगभग तैंतीस मन सोना दान दिया। महाराजा ने अपने शाही दरबार में मुसलमान फकीर भाइयों, डोगरों व ब्राह्मण, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि व्यक्तियों को भरोसेलायक पदों पर नियुक्त किया। इससे महाराजा रणजीत सिंघ का राज्य सचमुच धर्म-निरपेक्ष सिद्ध होता है।

महाराजा रणजीत सिंघ निरीह लोगों को सम्मान, निराश्रितों को आश्रय देते थे। सबसे प्यार करने वाले महाराजा लोगों के सच्चे हमदर्द, रक्षक और मसीहा थे। वे भेस बदलकर लोगों के दुख-दर्द जानने, समझने की कोशिश किया करते थे। दीन-दुखियों, गरीबों की मदद करने को वे अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। उन्हें जहां एक तरफ 'महाराजा' कहा जाता है, वहीं दूसरी तरफ उन्हें 'पांडी पातशाह' भी कहा जाता है। यूरोपीय सैलानी विलियम बैंटिक को भी

उनकी अद्भुत प्रतिभा, तीक्ष्ण बुद्धि एवं क्षमता का गुणगान करना पड़ा था। महाराजा की स्मरण-शक्ति अति तेज़ थी। उन्हें साधारण बातों से लेकर राज्य-प्रबंधन के गंभीर मसलों तक की जानकारी रहती थी।

महाराजा रणजीत सिंघ विद्वान और गुणवान व्यक्तियों के कद्रदान थे। उन्हें संगीत, चित्रकला, साहित्य व लोक-कलाओं से काफी लगाव था। वे उत्तम नस्ल के घोड़ों के भी काफी शौकीन थे। भूमि व राजस्व विभाग का अनुकरणीय प्रबंध करना उनकी शासकीय कार्य-कुशलता को दर्शाता था। उनका संयमित तथा संतुलित व्यवहार, सरल स्वभाव उनके व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावशली बना देता था। सन् १८०९ ई. में शांति व मित्रता के लिए फिरंगियों के साथ दरिया सतलुज के किनारे संधि करना, उनका एक साहसी फैसला था। उन्होंने अपनी सूझबूझ के साथ विशाल सिक्ख-राज्य की स्थापना की। उनका शासन पंजाब से लेकर पेशावर तक, अफगानिस्तान से लेकर जम्मू-कश्मीर तक, इसके आगे लद्दाख-चीन तक स्थापित हो चुका था। उन्होंने लाहौर को अपनी राजनीतिक राजधानी तथा श्री अमृतसर साहिब को अपनी धार्मिक राजधानी बनाया था।

महाराजा रणजीत सिंघ ने कई मंदिरों और मसजिदों को सोना ओर रुपए दान के रूप में भेंट किए। उन्होंने अभी धर्मों के पवित्र स्थानों की भी दिल खोलकर सेवा की थी।

उन्होंने अपनी सरकारी मुद्रा पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर वाले ही खालसाई शब्द उकेरने का गौरवपूर्ण कार्य किया था, जैसे :

''देगो तेगो फतहि ओ नुसरति बे-दिरंग।
याफत अज नानक गुरू गोबिंद सिंघ।''

यही उपरोक्त शब्द उनकी उस शाही मुहर पर भी अंकित होते थे, जो सरकारी पत्रों और दस्तावेजों पर लगाई जाती थी।

अपने जीवन-काल में उन्होंने इतने ज्यादा महत्वपूर्ण काम किए कि यहां सबका उल्लेख कर पाना संभव नहीं है। खालसा पंथ को ऊँचा दर्जा देने के लिए सरकारी झंडे पर 'अकाल सहाय' शब्द दर्ज करवाए। अपने नाम का या अपनी मिसल शुकरचक्किया का कहीं भी जिक्र तक नहीं किया।

महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज्य में समूह पंजाबियों को एकजुट करने का कार्य किया व एक सशक्त राजय स्थापित किया। वे कभी भी स्वयं को महाराजा नहीं समझते थे, बल्कि वे कहते थे कि मैं तो खालसा पंथ का एक अदना-सा सेवक हूं।

आखिर एक दिन सबको यह नाशवान संसार छोड़कर जाना होता है। सम्राटों के सम्राट, हृदय-सम्राट, शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ २८ जून, सन् १८३९ ई. को परलोक गमन कर गए। इ-स महान् व विनम्र महाराजा को कोटि-कोटि प्रणाम!

भाई वीर सिंघ का साहित्यक प्रभाव

-डॉ. धरम सिंघ *

भाई वीर सिंघ को आधुनिक साहित्य का पितामह माना जाता है और साथ ही महान लेखक भी। महान लेखकों का एक मापदंड यह भी होता है कि उत्तर काल के साहित्य पर उनके रचना-संसार का व्यापक प्रभाव अवश्य पड़ता है और भाई वीर सिंघ का यह प्रभाव स्पष्ट रूप से नज़र आता है।

प्रो. पूरन सिंघ के बारे में हम सभी जानते हैं कि वे जज़्बाती और मन की तरंगों में बह जाने वाले लेखक थे। जब वे भाई वीर सिंघ की संगत में आए तो न केवल उनके भीतर का साहित्यकार ही प्रकट हुआ, बल्कि उन्हें अपनी विरासत ख़ास कर पंजाब और पंजाबियत पर फख्र भी होने लगा। उनकी समूची काव्य रचना में पंजाब और पंजाबियत की झलक जगह-जगह मिलती है। ज्ञानी महां सिंघ की एक पुस्तक 'गुरमुख जीवन' में एक ग्रुप फ़ोटो है, जिसमें प्रो. पूरन सिंघ ज़मीन पर उनका घुटना पकड़े बैठे हैं। प्रो. पूरन सिंघ के मन में भाई वीर सिंघ के प्रति जो सम्मान था, यह तसवीर उसका प्रतीक मानी जा सकती है।

स. गुरबखश सिंघ प्रीतलड़ी ने अपने एक आलेख में यह बताया है कि दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे रुड़की में इंजीनियरिंग में दाख़िला लेने की तैयारी कर रहे थे तो वे अपने चाचा (जो उनके पिता के दोस्त थे) के पास मुलतान ज़िले के सिद्धनई हेॅडवर्क्स पर गए थे। ये चाचा जी भाई वीर सिंघ की लेखनी के बड़े प्रशंसक थे। उन्होंने अपने एक पुत्र का नाम भाई वीर सिंघ के एक प्रसिद्ध उपन्यास-पात्र से प्रेरणा लेकर 'बिजै सिंघ' रखा था। उन्होंने स. गुरबखश सिंघ को भाई वीर सिंघ की पुस्तकें-- 'सुंदरी' और 'बिजै सिंघ' पढ़ने के लिए दीं। पंजाबी साहित्य के साथ स. गुरबखश सिंघ प्रीतलड़ी की पहचान इन दोनों पुस्तकों के साथ ही हुई, जो बाद में शौक और साहित्यकारी में परिवर्तित हो गई। 'सुंदरी' और 'बिजै सिंघ' पढ़ कर स. गुरबखश सिंघ पर जो प्रभाव पड़ा, उस सम्बंध में उनका कथन है-- "इन रचनाओं को पढ़ने के बाद मेरे भीतरी खामोश पड़े सपने प्रकट होने के लिए उत्सुक होने लगे और मैंने

*११०, रोज़ एवेन्यू, रामतीर्थ रोड, श्री अमृतसर साहिब— १४३००५, फोन : ९८८८९-३९८०८

एक उपन्यास 'प्रतिमा' लिखा। यह मेरा पहला साहित्यक यत्न था और इसके प्रेरक भाई वीर सिंघ थे।'' इसके बाद स. गुरबखश सिंघ प्रीतलड़ी ने भाई वीर सिंघ की कवितायें पढ़ना आरंभ किया। उनके लिए यह भी एक नया अनुभव था। नये रंग-रूप की छोटी कविता उनके द्वारा लिखे जा रहे विषयों और प्रसंगों से मूलत: भिन्न थी, जिसने स. गुरबखश सिंघ का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया। भाई वीर सिंघ की एक अन्य रचना 'राणा सूरत सिंघ' के बारे में स. गुरबखश सिंघ की टिप्पणी थी- ''राणा सूरत सिंघ का प्लाट मुझे चाहे ज्यादा न भाया, परन्तु उनकी ज़ुबान और करुणा भरे प्रभाव ने मेरे ऊपर भाई वीर सिंघ की प्रतिभा का गहरा प्रभाव डाला।''

सितम्बर, १९३३ ई. में जब 'प्रीतलड़ी' पत्रिका शुरू हुई तो स. गुरबखश सिंघ ने इसका पहला अंक भाई वीर सिंघ को भी भेजा। भाई जी ने वह अंक पढ़ा और अपने भाव एक चिट्ठी में लिख भेजे। यह चिट्ठी बाद में दोनों के मध्य निकटता का संयोग बनी। पत्रिका 'प्रीतलड़ी' की रचनाओं तथा स. गुरबखश सिंघ की पुस्तकों के बारे में उस समय काफ़ी बवाल मचा था। बेशक कुछ टिप्पणियाँ 'खालसा समाचार' में भी प्रकाशित हुईं, लेकिन भाई वीर सिंघ ने अपनी कलम से एक शब्द भी स. गुरबखश सिंघ के ख़िलाफ़ न लिखा। स. गुरबखश सिंघ ऐसा करने को भी भाई वीर सिंघ का एहसान ही मानते थे। उनका कथन था-- 'खालसा समाचार' में कई सज्जनों ने मेरी बहुत नुकताचीनी की, परन्तु मैं बड़ा कृतज्ञ हूं कि भाई साहिब भाई वीर सिंघ ने मेरे ख़िलाफ़ एक शब्द भी न लिखा। उस समय जैसे मेरी दशा थी, इस महान लेखक द्वारा लिखा नुकताचीनी का एक भी लफ़्ज़ मेरा दिल तोड़ सकता था। कहने की ज़रूरत नहीं कि भाई वीर सिंघ की ख़ामोशी ने हमें स. गुरबखश सिंघ के रूप में एक महान लेखक दे दिया। भाई जोध सिंघ ने अपने एक लेख में मास्टर तारा सिंघ के हवाले के साथ लिखा है कि 'सुंदरी' उपन्यास पढ़ कर वे 'नानक चंद' से 'तारा सिंघ' बनने के लिए उत्साहित हुए।

जो लेखक सचेत रूप से भाई वीर सिंघ से प्रेरित और प्रभावित हैं, उनमें से प्रो. पूरन सिंघ की बात आरंभ में हो चुकी है। शेष लेखकों में डॉ. बलबीर सिंघ, ज्ञानी महां सिंघ, धनी राम चात्रिक, बीबी हरनाम कौर, कर्नल जगजीत सिंघ गुलेरिया, डॉ. जसवंत सिंघ नेकी तथा कुछ और भी हैं। अगर डॉ. बलबीर सिंघ की उदाहरण लें तो पुस्तक रूप में प्रकाशित उनके निबंधों के अलावा 'खालसा समाचार' में

उनके कई अन्य निबंध भी हैं। मेरी पीएच. डी. की एक छात्रा ने डॉ. बलबीर सिंघ के कम से कम दस निबंध ऐसे एकत्रित किये हैं जो किसी किताब में शामिल नहीं हैं। २९ नवंबर, १९१७ ई. को श्री गुरु नानक देव जी के गुरुपर्व के अवसर पर 'खालसा समाचार' का जो अंक प्रकाशित हुआ उसमें श्री गुरु नानक देव जी से सम्बन्धित कविताओं को एक शीर्षक के अधीन प्रकाशित किया गया था-- 'केसर क्यारी।' प्रतीत होता है कि इसी शीर्षक से प्रभावित होकर लाला धनी राम चात्रिक ने बाद में अपनी एक किताब का नाम 'केसर क्यारी' रखा। एक अन्य पुस्तक 'सूफीखना' की कविताओं पर भी भाई वीर सिंघ का प्रभाव देखा जा सकता है।

भाई संतोख सिंघ सिक्खों के प्रमुख इतिहासकार हुए हैं। जब भाई वीर सिंघ ने उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'गुरप्रताप सूरज' का संपादन किया तो उन्होंने यह गिला किया कि इतने बड़े कवि की कौम द्वारा कोई यादगार स्थापित नहीं की जा सकी। भाई वीर सिंघ के इस गिले को दूर करने के लिए उस समय के ओरिएंटल कॉलेज, लाहौर के प्रोफ़ेसर ज्ञानी खज़ान सिंघ ने यत्न आरंभ किए। ज्ञानी खज़ान सिंघ ने भाई संतोख सिंघ के जन्म-स्थान गाँव नूरदीन दी सरां गाँव (ज़िला तरनतारन) में उनका जन्म-स्थान खरीदा, जिसमें भाई वीर सिंघ ने भी उनकी आर्थिक रूप से मदद की और यादगार बनाने का कार्य आरंभ किया। यह यादगार एक आलीशान गुरुद्वारा साहिब के रूप में सुस्थित है। इस अरसे के दौरान ही ज्ञानी खज़ान सिंघ ने महांकवि भाई संतोख सिंघ का जीवन-वृत्त भी लिखा, जो बाद में प्रकाशित हुआ।

भाई वीर सिंघ की दानशीलता का यही एकमात्र प्रमाण नहीं, बल्कि और भी कई मिसालें हैं। भाई जी जब पुरातन सिक्ख-ग्रंथों की सम्पादना कर रहे थे तो उन्हें इस बात का बड़ी तीव्रता के साथ एहसास हुआ कि सिक्ख ऐतिहासिक सामग्री को सँभालने, वैज्ञानिक ढंग के साथ इतिहास लिखने और इसकी भ्रांतियों को दूर करने के लिए संस्थागत रूप से यत्न होने अति आवश्यक हैं। इस कार्य के लिए उनका ध्यान ख़ालसा कॉलेज, श्री अमृतसर साहिब की तरफ गया। उन्हें लगा कि खालसा कॉलेज ही सबसे उचित स्थान है। भाई जी के निकटवर्ती कुछ प्रभावशाली लोग इस कॉलेज की प्रशासनिक समिति में शामिल थे। उन्हें प्रेरित कर भाई जी ने इस कार्य के लिए मनाया तथा पहलकदमी करते हुए कुछ धनराशि भी चेक के माध्यम से भेजी।

अब सवाल था कि इस नये खुल रहे

महकमे में किसे नियुक्त किया जाये! इतिहास की खोज के लिए सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन की नियुक्ति की गई, परन्तु जल्दी ही उनका देहांत हो गया। बाद में इस स्थान पर १९३०- १९४९ ई. तक डॉ. गंडा सिंघ और फिर १९५० ई. में डॉ. किरपाल सिंघ नियुक्त हुए। भाई जी ने अपने प्रभाव और प्रयत्न से पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ तथा पंजाब सरकार से कुछ धनराशि अनुदान के रूप में मंजूर भी करवा ली। इस विभाग द्वारा किये जा रहे खोज-कार्यों में वे निजी रूप से रुचि लेते रहे। १९४७ ई. में पंजाब का विभाजन हुआ। इस विभाजन की भयानकता में पश्चिमी पंजाब में सिक्खों का हुआ कत्ल-ए-आम शामिल है। भाई वीर सिंघ ने डॉ. किरपाल सिंघ और स. गंगा सिंघ (बेदी) को पीड़ित व प्रभावित लोगों के साथ मुलाकात कर उनके बयान रिकार्ड करने का कार्य सौंपा, जिसके आधार पर कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। भाई वीर सिंघ का ख़ालसा कॉलेज के इस विभाग के साथ लगाव एवं स्नेह कैसा रहा और किस प्रकार की फिक्रमंदी रही, इसका कुछ एहसास हमें डॉ. किरपाल सिंघ द्वारा संपादित पुस्तक 'भाई वीर सिंघ की ऐतिहासिक रचना' की भूमिका में से हो जाता है। यहाँ यह वर्णन करना भी गलत नहीं होगा कि भाई जी का सिक्ख इतिहास के प्रति प्रेम व लगन का एहसास हमें उस समय इतिहास की प्रकाशित कुछ पुस्तकों में से, भाई वीर सिंघ द्वारा लिखित भूमिकाओं में से भी हो जाता है। बावा प्रेम सिंघ होती की पुस्तक 'हरी सिंघ नलूआ', डॉ. गंडा सिंघ की पुस्तक 'बाबा बंदा सिंघ बहादुर' और सीता राम कोहली द्वारा संपादित गणेश दास द्वारा रचित 'फतहनामा गुरू खालसा जी' की भूमिकाएं भाई वीर सिंघ द्वारा ही लिखित हैं।

इस प्रकार सिक्ख ऐतिहासिक शोध-कार्य में शोधकर्ताओं को प्रोत्साहन देकर और उनकी आर्थिक सहायता कर इस कार्य में लगाना भाई वीर सिंघ के प्रभाव का ही निष्कर्ष है। सिक्ख इतिहास के आधुनिक शोधकर्ताओं को भाई जी के इतिहास-संकल्प, इतिहास-दर्शन तथा अन्य ऐतिहासिक बारीकियों का अध्ययन करने की तरफ ध्यान देना चाहिए।

ख़बरनामा

श्री गुरु अमरदास जी के 450 वर्षीय ज्योति-जोत दिवस के समागम पंथक रिवायतों के अनुसार प्रारम्भ

श्री अमृतसर साहिब : १४ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से सिक्ख इतिहास की दो अहम शताब्दियाँ-- श्री गुरु रामदास जी का ४५० वर्षीय गुरतागद्दी दिवस और श्री गुरु अमरदास जी का ४५० वर्षीय ज्योति-जोति दिवस कौमी सद्भावना के साथ मनाने के लिए समागमों की प्रारंभता गुरुद्वारा श्री बाउली साहिब श्री गोइंदवाल साहिब से पंथक रिवायतों के अनुसार की गई। ये शताब्दी दिवस १६ से १८ सितम्बर, २०२४ ई. के दौरान मनाए जाएंगे। समागमों की प्रारंभता के अवसर पर श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए और विशाल अमृत-संचार हुआ, जिसमें श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ ने विशेष रूप से भाग लिया। इस अमृत संचार के दौरान ४९१ प्राणी अमृत छक कर गुरु वाले बने, जिन्हें ककार धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से नि:शुल्क दिए गए।

इसके अलावा गुरुद्वारा श्री बाउली साहिब में शताब्दी से सम्बन्धित शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की तरफ से धर्म प्रचार कमेटी के विशेष कार्यालय का भी उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सिक्ख कौम द्वारा शताब्दी दिवस खालसयी मर्यादा के साथ मनाए जाते हैं और इन दोनों शताब्दियों के समागम भी ऐतिहासिक होंगे। उन्होंने कहा कि शताब्दी समागमों से पहले ज़ोरदार धर्म प्रचार लहर आरंभ की जायेगी, जिसके लिए गुरुद्वारा श्री बाउली साहिब में खोला गया कार्यालय कार्य करेगा।

इसी दौरान गुरुद्वारा श्री बाउली साहिब में लंगर हाल तैयार करने की सेवा भी शुरू की गई। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की तरफ से यह सेवा बाबा कशमीर सिंघ भूरीवालों को सौंपी गई है। सेवा की आरंभता से पहले श्री अनंदु साहिब का पाठ कर अरदास की गई।

इस अवसर पर एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के अलावा कनिष्ठ उपाध्यक्ष भाई गुरबख़्श सिंघ खालसा, महासचिव भाई

रजिंदर सिंघ महिता, पूर्व प्रधान स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके, कार्यकारी समिति के सदस्य स. खुशविंदर सिंघ (भाटिया), स. जसवंत सिंघ पुड़ैण, सदस्य स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्डु, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला, स. अमरजीत सिंघ बंडाला, स. गुरमीत सिंघ बूह, बीबी गुरिंदर कौर भोलूवाल, धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, स. सुखवरश सिंघ पन्नू, स. बलतेज सिंघ खोख, बाबा कशमीर सिंघ कारसेवा भूरीवाले, बाबा सुखविंदर सिंघ भूरीवाले, बाबा गुरप्रीत सिंघ खडूर साहिब, सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ धामी, अपर सचिव स. सुखमिंदर सिंघ, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. तेजिंदर सिंघ पड्डा आदि उपस्तित थे।

इटली में अमृतधारी सिक्ख पर कृपाण पहनने के कारण मुकद्दमा दर्ज करना सिक्खों की धार्मिक आज़ादी के विरुद्ध : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २१ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने इटली के मिलान शहर में एक अमृतधारी सिक्ख स. गुरबचन सिंघ के विरुद्ध कृपाण पहनने के कारण दर्ज किये गए मुकद्दमे की कार्रवाई की सख़्त शब्दों में निंदा की है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि कृपाण सिक्खों के पाँच ककारों में से एक ककार है, जिसे सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार अमृतधारी सिक्ख हमेशा अपने शरीर के अंग-संग रखता है। उन्होंने कहा कि अमृतधारी सिक्ख के शरीर से कृपाण को जुदा करना सिक्खों की धार्मिक आज़ादी के विरुद्ध है।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने कहा कि सिक्खों को उनके देश भारत का संविधान भी कृपाण पहनने की स्वतंत्रता प्रदान करता है, इसलिए इटली की सरकार को भी सिक्खी सरोकारों को समझते हुए, सिक्खों को अपने देश में कृपाण पहनने की छूट देनी चाहिए। एडवोकेट धामी ने कहा कि आज सिक्ख दुनिया के कई देशों में बसते हैं जहाँ उन्होंने अपनी मेहनत और ईमानदारी के साथ बड़ी प्राप्तियाँ हासिल की हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका, कनाडा और बरतानिया जैसे विकसित देशों में भी सिक्खों को कृपाण पहनने की छूट है। एडवोकेट धामी ने इटली की सिक्ख संगत से भी अपील की कि स. गुरबचन सिंघ के विरुद्ध दर्ज किये गए केस का डट कर विरोध करें और इसकी समूची जानकारी

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के पास भी पहुँचाएं।

एडवोकेट धामी ने कहा कि इस मुकद्दमे को रद्द करवाने के लिए भारत में इटली के राजदूत और भारत के विदेश मंत्रालय को भी पत्र लिख कर सख़्त एतराज़ प्रकट करने के साथ-साथ सिक्खों के अधिकारों व कृपाण की महत्ता के बारे में जानकारी भेजी जायेगी। उन्होंने भारत के विदेश मंत्री डा. एस. जयशंकर से भी अपील की कि वे स. गुरबचन सिंघ के मामले में इटली की सरकार के साथ बातचीत कर उनके विरुद्ध दर्ज किया गया मुकद्दमा रद्द करवाएं।

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब से गुरबाणी-कीर्तन के प्रसारण के लिए एपल आधारित एप जारी

श्री अमृतसर साहिब : ९ मई : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब से प्रसारित होने वाले गुरबाणी-कीर्तन को अब एपल फ़ोन, लैपटॉप, आई-पैड और कंप्यूटर इस्तेमाल करने वाले भी ऑडियो रूप में सुन सकेंगे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने इस सम्बन्ध में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की आधिकारिक एपल आईओएस आधारित एप्लीकेशन जारी की। इस एप का नाम 'एसजीपीसी गुरबाणी कीर्तन' है, जो कि एपल एप्लीकेशन स्टोर से श्रद्धालु डाउनलोड कर सकेंगे।

एप जारी करते समय शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सचखंड श्री हरिमंदर साहिब पूरे विश्व की संगत के लिए आस्था का केंद्र है और प्रत्येक श्रद्धालु की इस पवित्र स्थान से गुरबाणी-कीर्तन श्रवण करने की इच्छा होती है। संगत की इस भावना का सम्मान करते हुए एप जारी की गई है, क्योंकि मौजूदा समय में प्रत्येक व्यक्ति मोबाइल आदि के साथ जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि एपल का फ़ोन रखने वालों के लिए आज जारी की गई इस गुरबाणी एप से पहले एंड्रोइड फ़ोन का इस्तेमाल करने वालों के लिए भी एप कार्यशील है, जिसे संगत की तरफ से भरपूर समर्थन मिल रहा है। एडवोकेट धामी ने संगत से अपील की कि वह इस आधिकारिक एप का प्रयोग कर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब से रोज़ाना होने वाले कीर्तन का सीधा ऑडियो प्रसारण श्रवण करे।

इस अवसर पर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड, धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ धामी, धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां, उप सचिव प्रो. सुखदेव सिंघ आदि उपस्थित थे।

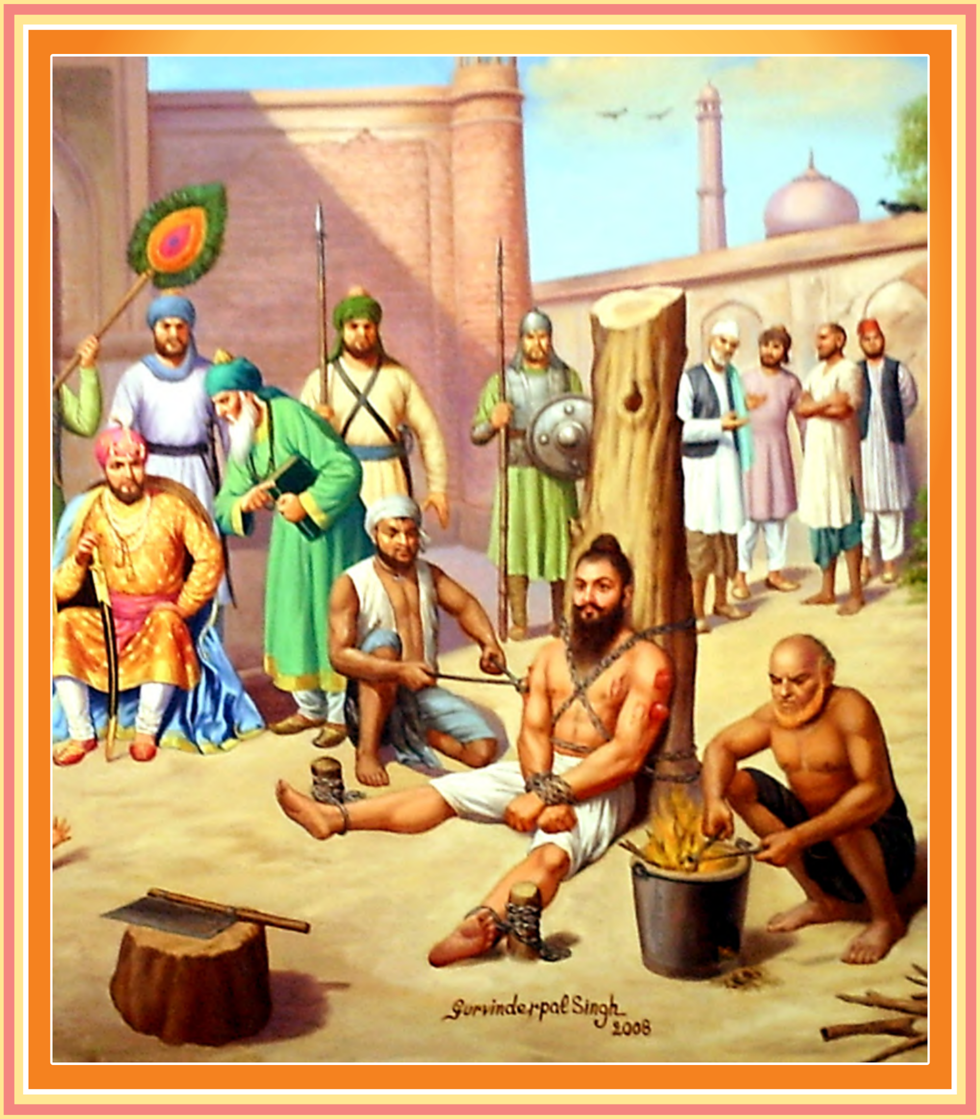

बाबा बंदा सिंघ बहादुर को शहीद किए जाने का दृश्य

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

June 2024
DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

घल्लूघारा जून 1984 ई. के समय क्षतिग्रस्त हुई
श्री अकाल तख़्त साहिब की इमारत का बाहरी दृश्य

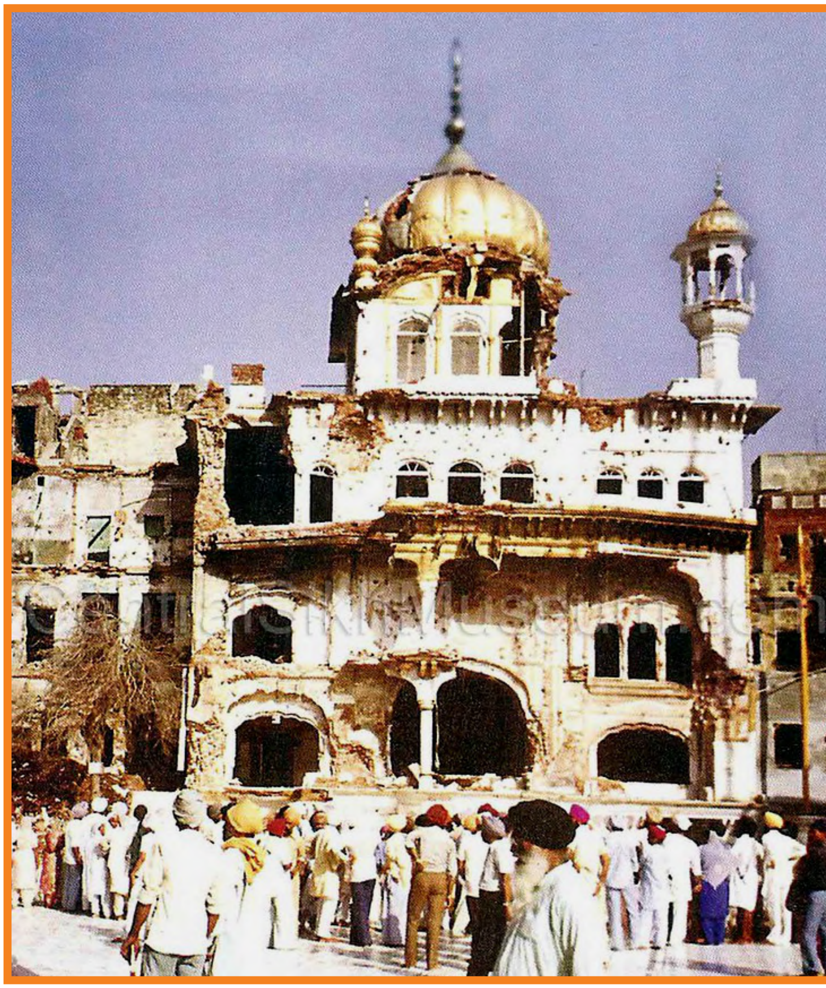

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-6-2024